वर्ष –01, अंक – 01, (जनवरी–मार्च 2023)

राजभवन संवाद

राजभवन, बिहार की त्रैमासिक पत्रिका

- ★ शब्द संवाद : बिहार आना मेरा सौभाग्य
- ★ अमृतकाल : राष्ट्र के जागरण का कालोत्सव
- ★ भारत को विश्वगुरु बनाने के लिए स्व–जागरण जरूरी
- ★ नालंदा विश्वविद्यालय : शिक्षा की गौरवशाली विरासत
- ★ महान गणितज्ञ और खगोलविद् आर्यभट्ट

@GovernorBihar @Raj Bhavan, Bihar www.governor.bih.nic.in

काव्य स्वर

05 फरवरी, 1916 में गया (बिहार) के मैगरा ग्राम में जन्मे छायावादोत्तर काल के सुविख्यात कवि आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री उन थोड़े–से कवियों में रहे हैं, जिन्हें हिंदी कविता के पाठकों से बहुत मान–सम्मान मिला है। आचार्य का काव्य संसार बहुत ही विविध और व्यापक है। प्रारंभ में उन्होंने संस्कृत में कविताएँ लिखीं। फिर महाकवि निराला की प्रेरणा से हिंदी में आए। 'रूप–अरूप, 'तीर तरंग, 'शिवा, 'मेघ–गीत, 'अवंतिका, 'कानन, 'अर्पण आदि इनके मुख्य काव्य संग्रह हैं। ये 'साहित्य वाचस्पति, 'विद्यासागर, 'काव्य–धुरीण तथा 'साहित्य मनीषी आदि अनेक उपाधियों से सम्मानित हुए तथा पद्मश्री जैसे राजकीय पुरस्कार भी इन्हें मिले, जिन्हें स्वीकार करने से उन्होंने इनकार कर दिया। इनका देहान्त 07 अप्रैल, 2011 हो हुआ।

आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री

(05.02.1916 – 07.04.2011)

जनम-जनम की पहचानी वह तान कहाँ से आई!

जनम-जनम की पहचानी वह तान कहाँ से आई !
किसने बाँसुरी बजाई

अंग-अंग फूले कदंब साँस झकोरे झूले
सूखी आँखों में यमुना की लोल लहर लहराई !
किसने बाँसुरी बजाई

जटिल कर्म-पथ पर थर-थर काँप लगे रुकने पग
कूक सुना सोए-सोए हिय में हूक जगाई !
किसने बाँसुरी बजाई

मसक-मसक रहता मर्मस्थल मरमर करते प्राण
कैसे इतनी कठिन रागिनी कोमल सुर में गाई !
किसने बाँसुरी बजाई

उतर गगन से एक बार फिर पी कर विष का प्याला
निर्मोही मोहन से रूठी मीरा मृदु मुस्काई !
किसने बाँसुरी बजाई

वर्ष -01, अंक - 01, (जनवरी-मार्च 2023)

राजभवन संवाद
राजभवन, बिहार की त्रैमासिक पत्रिका

प्रधान संपादक
रॉबर्ट एल.चोंग्थू

कार्यकारी संपादक
राकेश पाण्डेय

संपादक मंडल
प्रीतेश देसाई
संजय कुमार
धीरज नारायण सुधाँशु

सम्पादकीय पता : जन-सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना, बिहार - 800022
ई मेल : pr.rajbhavan@gmail.com
दूरभाष : 0612-2786119
E-Patrika - www.governor.bih.nic.in

प्रकाशक/मुद्रक : स्वत्व मीडिया नेटवर्क प्रा.लि., नियर कुल्हड़िया कॉम्प्लेक्स, पटना, बिहार से प्रकाशित एवं मारुति ऑफसेट, डी.एन. दास रोड, बंगाली अखाड़ा, पटना से मुद्रित।
ई मेल : swatvapatrika@gmail.com
दूरभाष : 9608190823

'राजभवन संवाद' के संकल्प

'राजभवन संवाद' (त्रैमासिक पत्रिका) का प्रतीक्षित अंक प्रस्तुत करते हुए हर्षातिरेक की अनुभूति हो रही है। संवाद की सार्थकता उसकी ग्राह्यता में होती है। संवाद से संबंधों की प्रगाढ़ता सर्वविदित है। मन के भावों की अभिव्यक्ति केवल गांठे ही नहीं सुलझाती है बल्कि सामंजस्य और समरसता की राहें भी सहज करती है। 'संवाद' मानव–मन की सहज प्रवृत्ति और अभिव्यक्ति का जरिया रहा है। आदिकाल से समाज किसी न किसी रूप में संवाद करता रहा है। शाब्दिक अभिव्यक्ति के विकास के पहले भी मानवीय संवेगों व आवेगों की भावाभिव्यक्ति के लिए संवाद की युक्ति संकेतों व प्रतीकों के जरिए अपनाई जाती रही है। आज के इस आधुनिक और तकनीकी विस्फोट के दौर में भी शाब्दिक संवाद की अपरिहार्यता सर्वस्वीकार्य है।

भारत दुनिया की सबसे बड़ी लोकतांत्रिक व्यवस्था वाला देश है। लोकतंत्र का प्राणवायु संवाद की सहजता ही है। देश प्रगति की राह पर सरपट आगे बढ़ रहा है और भारत का 140 करोड़ आकांक्षी जनमन इस विकास का सहयात्री है। वैश्विक स्तर पर भारत की प्रगति की स्वीकृति से देश का गौरव बढ़ा है। भारत आज दुनिया की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था में शामिल हो चुका है। 'स्व' के भाव के साथ 'सुराज और स्वदेश' का संकल्प संवाद की सहजता से ही अपने लक्ष्यों को हासिल करने में सफल होगा।

उल्लेखनीय है कि पूर्व में राजभवन की मासिक पत्रिका 'राजभवन संवाद' नाम से ही हिन्दी एवं अंग्रेजी में प्रकाशित हो रही थी, किन्तु कतिपय अपरिहार्य कारणों से लगभग तीन वर्षों तक इसका प्रकाशन बाधित रहा। महामहिम की प्रेरणा से पुनः इसका प्रकाशन हिन्दी त्रैमासिकी के रूप में प्रारम्भ किया जा रहा है।

'राजभवन संवाद' के प्रस्तुत अंक में राजभवन की गतिविधियाँ, महामहिम के उद्गार, उद्बोधन, साहित्य, समाज, संस्कृति, संस्कार, लोक सरोकार और शिक्षा के सुदृढ़ीकरण के लिए व्यक्त विचारों के साथ ही बिहार की विरासत, गौरव–पुरुष और लोकसंस्कृति पर आलेख तथा विश्वविद्यालय परिसरों की हलचलों आदि का समावेश इसे न केवल लोकोपयोगी बल्कि संग्रहणीय भी बनाता है।

शुभकामनाओं सहित,

(रॉबर्ट एल० चोंग्थू)
राज्यपाल के प्रधान सचिव

इस अंक में...

बिहार आना मेरा सौभाग्य	04
अमृतकाल : राष्ट्र के जागरण का कालोत्सव	06
राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने ली बिहार के राज्यपाल के पद की शपथ	08
भारत को विश्वगुरु बनाने के लिए स्व–जागरण जरूरी	11
शिक्षा का उद्देश्य अच्छा व्यक्ति तैयार करना – राज्यपाल	13
ग्रामीण क्षेत्रों में भी जाएं चिकित्सक	14
राजभवन को लोकभवन बनाने का करेंगे प्रयास – आर्लेकर	15
शिष्टाचार / मुलाकात	16
नालंदा विश्वविद्यालय : शिक्षा की गौरवशाली विरासत	20
सामूहिक प्रयास से ही शिक्षा में सुधार – राज्यपाल	22
आनेवाली पीढ़ी का दायित्व हमारा : कुलाधिपति	23
'आराम करने राजभवन नहीं आया'	24
मंदारेश्वर काशी विश्वनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार का शिलान्यास	27
महान गणितज्ञ और खगोलविद् आर्यभट्ट	28
बेजोड़ बेलग्रामी	29
'चैतऽ मासे राम के जनमिया हो रामा...'	30

बिहार आना मेरा सौभाग्य

राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर
राज्यपाल, बिहार

बिहार की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत अत्यंत समृद्ध है। यह राज्य अनेक महापुरुषों, पुण्यात्माओं और आध्यात्मिक आचार्यों की जन्मभूमि एवं कर्मभूमि रहा है। लोकतंत्र की जननी बिहार की पावन धरती पर आकर यहाँ के लोगों की सेवा करने का अवसर मिलना मेरे लिए सौभाग्य की बात है।

मुझे यहाँ आए लगभग दो महीने बीत चुके हैं और इस दौरान मैंने इस राज्य और यहाँ के लोगों को जानने का प्रयास किया है। मैंने अनुभव किया कि बिहार की जनता से मिलकर एवं उनसे संवाद कायम करके ही मैं इस राज्य की संस्कृति और यहाँ के अन्य विषयों को ठीक ढंग से समझ सकूँगा। यद्यपि फेसबुक एवं ट्वीटर सहित सोशल मीडिया के अनेक माध्यमों से यह कार्य हो सकते हैं और हो भी रहे हैं, परन्तु मुझे लगा कि इसके लिए राजभवन की एक पत्रिका भी होनी चाहिए। इस क्रम में अपने सहयोगियों के सुझाव पर हमने 'राजभवन संवाद' नामक त्रैमासिक पत्रिका के प्रकाशन का निर्णय लिया, जिसका प्रथम अंक आपके हाथों में है।

बिहारवासियों का सौभाग्य है कि उन्हें ऐसी परम्परा और धरोहर विरासत में मिले हैं, जो शायद किसी अन्य प्रदेश को नहीं मिला होगा। मुझे लगता है कि अपने इस वैभवपूर्ण विरासत को सामने रखकर हमें आगे बढ़ने की आवश्यकता है और इसी में बिहारवासियों की भलाई है।

विगत दो महीनों में आपने मुझे जो प्रेम दिया है, उसके लिए मैं हृदय से आपका आभारी हूँ। सभी प्रकार की समस्याएँ विभिन्न रूपों में हर जगह विद्यमान होती हैं और बिहार भी इनसे अछूता नहीं है, परन्तु हमें उनसे डरकर भागना नहीं है। समस्याओं से डटकर मुकाबला करते हुए उनका समाधान ढूँढ़ना ही पुरुषार्थ है। बिहार के लोगों और यहाँ के ऐतिहासिक महापुरुषों से मैंने यही सीखा है और मैं इस दिशा में कार्य करने का प्रयास भी कर रहा हूँ। मुझे विश्वास है कि मैं बिहारवासियों की सेवा कर उनका आशीर्वाद प्राप्त कर सकूँगा।

मैंने अनुभव किया कि बिहार की जनता से मिलकर एवं उनसे संवाद कायम करके ही मैं इस राज्य की संस्कृति और यहाँ के अन्य विषयों को ठीक ढंग से समझ सकूँगा। यद्यपि फेसबुक एवं ट्वीटर सहित सोशल मीडिया के अनेक माध्यमों से यह कार्य हो सकते हैं और हो भी रहे हैं, परन्तु मुझे लगा कि इसके लिए राजभवन की एक पत्रिका भी होनी चाहिए

बिहार के लोगों का सामान्य जीवन, उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आर्थिक उन्नति जैसे सारे विषय मेरे अपने हैं। यहाँ की संस्कृति और परम्परा के द्योतक अनेकानेक उत्सव, त्योहार, मेले आदि भी मेरे अपने हैं। इसलिए मैं चाहता हूँ कि अधिकाधिक रूप में इन सब का सहभागी बनूँ। हमारी पत्रिका 'राजभवन संवाद' आपके साथ जुड़ने का एक माध्यम है। इस पत्रिका के माध्यम से हर तीन महीने में राजभवन के विभिन्न क्रियाकलापों का ब्योरा विश्लेषण सहित आपके सामने रखने का प्रयास कर रहे हैं। लोगों की समस्याओं से जुड़कर उनका समाधान तलाशने में राजभवन की भूमिका के बारे में आप अपने विचारों से हमें अवगत करा सकते हैं। सोशल मीडिया के प्लेटफॉर्म पर भी हमारा राजभवन उपलब्ध है। अतः इस पत्रिका के अतिरिक्त फेसबुक, ट्वीटर एवं वेबसाइट आदि के जरिये भी आप हमसे संवाद स्थापित कर सकते हैं। आपके विचार एवं सुझाव हमारे लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होंगे और इसके आधार पर हम सब मिलकर बिहार के लिए कुछ कर सकेंगे।

मुझे यहाँ अनेक लोगों से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और ज्ञात हुआ कि सब लोग बिहार के हर विषय को लेकर संवेदनशील हैं तथा उनके पास इसके समाधान के लिए कुछ अच्छे विचार भी हैं। यहाँ की जनता, सरकार, प्रशासन और राजभवन– सबके सम्मिलित प्रयास से हम इन प्रश्नों का उत्तर ढूँढने की कोशिश करेंगे। हम ऐसी नकारात्मक भावनाओं का पूर्णतया त्याग कर दें कि हमारा बिहार पिछड़ा एवं गरीब है और हम कुछ नहीं करने की स्थिति में हैं। हम बिहार के लिए कुछ कर सकते हैं और हमारी युवापीढ़ी इसमें उल्लेखनीय भूमिका निभा सकती है। हमें किसी के सामने हाथ नहीं फैलाना है, बल्कि हम दूसरों को देने में सक्षम हैं। इस प्रकार के उच्चतर और सकारात्मक भाव के साथ आत्मविश्वासपूर्वक आगे बढ़ने पर हम कुछ करके दिखा सकते हैं। मुझे विश्वास है कि बिहार की जनता इसके लिए पूरी तरह सक्षम है और अपनी पूरी क्षमता के साथ काम भी कर रही है।

आगामी तीन महीनों के बाद हम इस पत्रिका के अगले अंक के साथ पुनः मिलेंगे। आप अपने विचार और राय से हमें जरूर अवगत करायें।

भारत माता की जय।

■

इस पत्रिका के माध्यम से हर तीन महीने में राजभवन के विभिन्न क्रियाकलापों का ब्योरा विश्लेषण सहित आपके सामने रखने का प्रयास कर रहे हैं। लोगों की समस्याओं से जुड़कर उनका समाधान तलाशने में राजभवन की भूमिका के बारे में आप अपने विचारों से हमें अवगत करा सकते हैं। सोशल मीडिया के प्लेटफॉर्म पर भी हमारा राजभवन उपलब्ध है

अमृतकाल

राष्ट्र के जागरण का कालोत्सव

■ प्रीतेश देसाई

आज़ादी का अमृत काल यानी – आज़ादी की ऊर्जा का संचित अमृत, स्वाधीनता सेनानियों से प्रेरणाओं का अमृत, नए विचारों का अमृत, नए संकल्पों का अमृत और आत्मनिर्भरता का अमृत। इसलिए, आजादी का अमृत काल राष्ट्र के जागरण का कालोत्सव है। यह काल सुराज्य के सपने को पूरा करने का भी महोत्सव है। यह महोत्सव वैश्विक शांति का, विकास का महोत्सव है। इसलिए भारत के विकास और भविष्य के लिए अगले 25 वर्ष बेहद महत्वपूर्ण हैं।

देश के प्रधानमंत्री ने आजादी के 'अमृत काल' में 'पंच प्रण' के संकल्प का आह्वान किया है, जो भारत की आजादी के 100 वर्ष पूरे होने पर देश की स्थिति के दिशादर्शक तत्व हैं। वर्ष 2047 में देश की आजादी के 100 साल पूरे हो जाएंगे और इस पंच प्रण, जिसमें 'विकसित भारत', 'गुलामी से मुक्ति', 'विरासत पर गर्व', 'एकता और एकजुटता' एवं 'नागरिकों का कर्तव्य' शामिल हैं, को स्वर्णिम काल तक पूरा करना हम सबका समेकित दायित्व है।

विकसित भारत

अब देश को बड़े संकल्प लेकर चलना होगा। छोटे–छोटे संकल्प का अब समय नहीं है। आने वाले 25 वर्षों में हमें किसी भी कीमत पर विकसित भारत चाहिए, उससे कुछ कम नहीं होना चाहिए। स्वच्छता अभियान, कोरोना वैक्सीनेशन अभियान, ढाई करोड़ लोगों को बिजली कनेक्शन, खुले में शौच से मुक्ति, रिन्यूअल व ग्रीन एनर्जी आदि सभी मानकों पर हम संकल्प के साथ आगे बढ़ रहे हैं। इन सभी बड़ी चीज़ों ने भारत को विकसित देश की राह पर अग्रसर किया है।

गुलामी से मुक्ति

'पंच प्रण' में दूसरा संकल्प 'गुलामी से मुक्ति' है। हमारे मन के भीतर किसी भी कोने में गुलामी का एक भी अंश न बचा रहे। यदि जरा भी गुलामी है तो उसे किसी भी हालत में बचने नहीं देना है बल्कि उखाड़ फेंकना है। सैकड़ों वर्षों की जिस गुलामी ने हमें जकड़कर रखा है, उससे 100 फीसदी मुक्ति पानी ही होगी। क्योंकि गुलामी किसी भी देश को दीमक की तरह धीरे–धीरे खा जाती है तथा इसका परिणाम लंबे समय के बाद दिखता है।

विरासत पर गर्व

सभी नागरिकों को अपने देश की विरासत पर गर्व होना चाहिए। हमें अपने सामर्थ्य पर भरोसा होना चाहिए। इसी विरासत ने भारत को कभी स्वर्ण काल दिया था। हमें अपनी पारिवारिक व्यवस्था पर भी गर्व करना है। हमारी विरासत को विश्व मान रहा है। भारत की जीवनशैली से विश्व प्रभावित है। सबके सुख और सबके आरोग्य की बात करना हमारी विरासत की प्राथमिकता है।

हम वे लोग हैं जो जीव में शिव देखते हैं। हमें विश्व से किसी प्रमाण पत्र की आवश्यकता नहीं। देश को अपना एक मानक बनाना होगा। हम अपनी धरती से जुड़ेंगे, तभी ऊंचा उड़ेंगे। ग्लोवल वार्मिंग के हल के लिए समूचा विश्व भारत की ओर देख रहा है। हमारे पास विश्व को देने के लिए बहुत कुछ है। भारत के पास अनमोल क्षमता है। एक बार अगर हम सब संकल्प लेकर पथ पर चल पड़े तो निश्चित ही निर्धारित लक्ष्यों को हासिल कर पूरे देश को गर्व से भर देंगे।

एकता और एकजुटता

हमें अपने देश की विविधता को बड़े उल्लास से मनाना चाहिए। लैंगिक समानता, नेशन फर्स्ट, एक भारत श्रेष्ठ भारत, देश के श्रमिकों का सम्मान आदि इसी कड़ी का महत्वपूर्ण हिस्सा है। देश में नारी का अपमान एक प्रमुख विकृति है, जिससे निजात पाने का रास्ता हर हाल में खोजना ही होगा। जब हम अपनी धरती से जुड़ेंगे, तभी हम ऊंची उड़ान भरेंगे, तभी विश्व को समाधान दे पाएंगे। क्योंकि किसी देश की सबसे बड़ी ताक़त उस देश की एकता और एकजुटता में ही होती है। अगर ये न हों तो देश के पतन की शुरुआत होने लगती है। प्रगति बाधित होता है और कलह बढ़ता है।

नागरिकों का कर्त्तव्य

नागरिकों का कर्तव्य देश और समाज की प्रगति का रास्ता तैयार करता है। यह मूलभूत प्राणशक्ति है। देश के प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री और राष्ट्रपति भी इससे बाहर नहीं हैं। एक नागरिक के तौर पर अक्सर हम अपने अधिकार की बातें तो करते हैं, मगर कर्त्तव्य हमारी नजरों से ओझल हो जाता है। बिजली की बचत, खेतों में मिलने वाले पानी का पूरा इस्तेमाल, केमिकल मुक्त खेती, हर कीमत पर भ्रष्टाचार से दूरी, अपने आस–पास स्वच्छता का ख्याल रखना आदि हर क्षेत्र में नागरिकों की जिम्मेदारी और कर्त्तव्य हैं। किसी देश का प्रत्येक नागरिक अगर अपना कर्तव्य निष्ठापूर्वक निभाने लगे तो देश हमेशा मजबूती से खड़ा रहता है और हर क्षेत्र में आगे बढ़ता रहता है। आने वाले 25 वर्षों के लिए हमें भी उन पंच प्रण पर अपनी शक्ति को केंद्रित करना होगा। हमें पंच प्रण को लेकर वर्ष 2047 तक चलना है, जब आजादी के 100 वर्ष पूरे होंगे। हमें आजादी के दीवानों के सारे सपने पूरे करने का जिम्मा उठाकर चलना होगा।

आजादी के इतने दशकों के बाद पूरे विश्व का भारत की तरफ देखने का नजरिया बदल चुका है। समस्याओं का समाधान समूचा विश्व भारत की धरती पर खोजने लगा है। विश्व की सोच में यह परिवर्तन 75 वर्षों की हमारी यात्रा का परिणाम है। इस 'पंच प्रण' के माध्यम से आने वाले 25 वर्षों का एक सुखद ब्लू प्रिंट हमारे सामने है। यदि यह सफलतापूर्वक पूरा हो जाए तब वह दिन दूर नहीं जब हमारा देश विश्व शक्ति के रूप में स्थापित हो जाएगा।

भारत की जनता आकांक्षित जनमन है। आकांक्षी समाज किसी भी देश की बहुत बड़ी शक्ति होती है और हमें गर्व है कि आज भारत के हर कोने में, हर समाज के हर वर्ग में, हर तबके में, असीम आकांक्षाएं हैं। देश का हर नागरिक यथास्थिति बदलना चाहता है, बदलते देखना चाहता है। 75 वर्षों में संजोए हुए सारे सपने अपनी ही आंखों के सामने पूरा करने के लिए वे लालायित व उत्साहित हैं। अब इस अमृतकाल में हम सभी को अपनी महान सांस्कृतिक परंपराओं और उच्च नैतिक मूल्यों पर चलते हुए देश को स्वच्छ, स्वस्थ और खुशहाल बनाने के लिए एकजुट होकर आगे बढ़ने की जरूरत है।

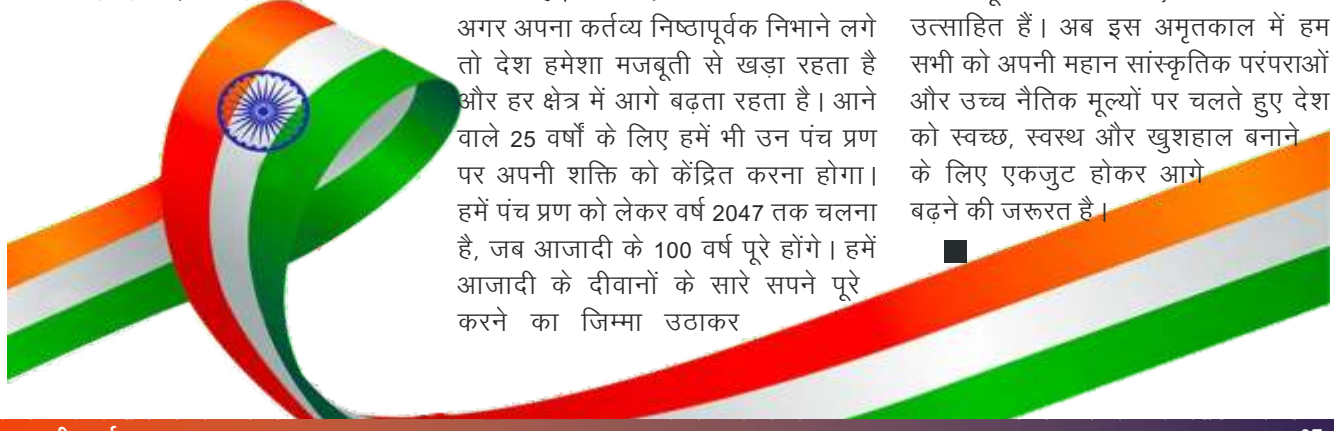

श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर बिहार के राज्यपाल के पद की शपथ लेते हुए (17 फरवरी, 2023)

राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने ली बिहार के राज्यपाल के पद की शपथ

राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 17 फरवरी, 2023 को राजभवन के राजेन्द्र मंडप में राज्यपाल, बिहार के पद की शपथ ली।

पटना उच्च न्यायालय के माननीय कार्यकारी मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री चक्रधारी शरण सिंह ने उन्हें शपथ दिलाई। श्री आर्लेकर ने भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् बिहार के 41वें राज्यपाल के रूप में शपथ ली।

राज्यपाल ने हिन्दी भाषा में इस प्रकार शपथ ली– ''मैं, राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर, ईश्वर की शपथ लेता हूँ कि मैं श्रद्धापूर्वक बिहार के राज्यपाल के पद का कार्यपालन करूँगा तथा अपनी पूरी योग्यता से संविधान और विधि का परिरक्षण, संरक्षण और प्रतिरक्षण करूँगा और मैं बिहार की जनता की सेवा और कल्याण में निरत रहूँगा।''

शपथ ग्रहण समारोह में बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार, उप मुख्यमंत्री श्री तेजस्वी प्रसाद यादव, बिहार विधान परिषद् के सभापति श्री देवेश चन्द्र ठाकुर, बिहार विधान सभा के अध्यक्ष श्री अवध बिहारी चौधरी, अनेक मंत्रीगण, बिहार विधान परिषद् के नेता विरोधी दल श्री सम्राट चौधरी, बिहार विधान सभा के नेता विरोधी दल श्री विजय कुमार सिन्हा, लेडी गवर्नर श्रीमती अनघा आर्लेकर, पटना नगर निगम की मेयर श्रीमती सीता साहू, महाधिवक्ता, बिहार विधानमंडल के अनेक सदस्यगण, बिहार सरकार के वरीय पदाधिकारीगण, महामहिम राज्यपाल के परिजन तथा अन्य गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

शपथ ग्रहण के पूर्व मनोनीत राज्यपाल श्री आर्लेकर के पटना हवाई अड्डा पहुँचने पर माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार सहित अनेक गणमान्य महानुभावों एवं वरीय पदाधिकारियों ने उनका स्वागत किया। उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर भी दिया गया।

■

राज्यपाल श्री फागू चौहान को दी गई विदाई

महामहिम राज्यपाल श्री फागू चौहान को पटना हवाई अड्डा पर पुष्प–गुच्छ प्रदान कर मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार, उप मुख्यमंत्री श्री तेजस्वी प्रसाद यादव एवं अन्य मंत्रीगण ने सादर विदाई दी। राज्यपाल को हवाई अड्डे पर सलामी भी दी गई। इस अवसर पर मुख्य सचिव, पुलिस महानिदेशक एवं अन्य पदाधिकारीगण भी उपस्थित थे।

■

विदाई के दौरान राज्यपाल श्री फागू चौहान पटना हवाई अड्डा पर गार्ड ऑफ ऑनर लेते हुए (16 फरवरी, 2023)

दोनों सदनों के संयुक्त अधिवेशन में राज्यपाल का अभिभाषण

बिहार विधानमंडल के दोनों सदनों के संयुक्त अधिवेशन में महामहिम राज्यपाल (27 फरवरी, 2023)

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने बजट सत्र के प्रथम दिन बिहार विधानमंडल के दोनों सदनों के संयुक्त अधिवेशन को सेन्ट्रल हॉल में 27 फरवरी, 2023 को संबोधित किया।

इससे पूर्व महामहिम का बिहार विधान मंडल भवन के मुख्य प्रवेश द्वार पर माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार, माननीय सभापति, बिहार विधान परिषद् श्री देवेश चन्द्र ठाकुर, माननीय अध्यक्ष, बिहार विधान सभा श्री अवध बिहारी चौधरी तथा अन्य महानुभावों द्वारा स्वागत किया गया।

बिहार विधान मंडल में महामहिम का स्वागत (27 फरवरी, 2023)

राज्यपाल ने न्यायमूर्ति श्री के. विनोद चन्द्रन को पटना उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के पद की शपथ दिलायी

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने न्यायमूर्ति श्री के० विनोद चन्द्रन को पटना उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के पद की शपथ दिलायी।

राजभवन के दरबार हॉल में 29 मार्च, 2023 को आयोजित इस शपथ ग्रहण समारोह में मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार, बिहार विधान परिषद के सभापति श्री देवेश चन्द्र ठाकुर, बिहार विधान सभा के अध्यक्ष श्री अवध बिहारी चौधरी, राज्य सरकार के अनेक मंत्रीगण, पटना उच्च न्यायालय एवं केरल उच्च न्यायालय के न्यायाधीशगण, अवकाशप्राप्त न्यायाधीशगण, बार एसोसिएशन के सदस्यगण, वरीय अधिवक्तागण, बिहार के महाधिवक्ता, बिहार मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष एवं सदस्यगण, पटना उच्च न्यायालय एवं राज्य सरकार के विभिन्न वरीय पदाधिकारीगण तथा अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे।

पटना उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को शपथ दिलाते हुए महामहिम (29 मार्च, 2023)

वन वर्ल्ड टी०बी० सम्मेलन–2023 में राज्यपाल

राजभवन, पटना से वीडियो कॉन्फ्रेन्सिंग के माध्यम से भाग लेते राज्यपाल (24 मार्च, 2023)

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने रूद्राक्ष इंटरनेशनल को–ऑपरेशन एण्ड कन्वेन्शन सेन्टर, वाराणसी में 24 मार्च, 2023 को वर्ल्ड टी०बी० डे के अवसर पर आयोजित 'वन वर्ल्ड टी०बी० सम्मेलन–2023' में राजभवन, पटना से वीडियो कॉन्फ्रेन्सिंग के माध्यम से भाग लिया।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने भारत टी०बी० रिपोर्ट–2023 जारी करने के अतिरिक्त विभिन्न पहलों यथा–टी०बी० मुक्त पंचायत अभियान, लघु टी०बी० निवारक उपचार (टी०पी०टी०) एवं टी०बी० के लिए परिवार पर केंन्द्रित देखभाल मॉडल का भी शुभारम्भ किया। उन्होंने राष्ट्रीय रोग नियंत्रण और उच्च रोकथाम प्रयोगशाला केन्द्र की आधारशिला रखी तथा महानगर सार्वजनिक स्वास्थ्य निगरानी इकाई, वाराणसी के लिए साइट का अनावरण किया। उन्होंने टी०बी० को समाप्त करने की दिशा में कुछ राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों और जिलों की प्रगति के लिए उन्हें सम्मानित किया। ■

राज्यपाल सचिवालय के पदाधिकारियों ने नि–क्षय मित्र के रूप में निबंधन कराया

राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री राबर्ट एल० चोंग्थू सहित राज्यपाल सचिवालय के पदाधिकारियों ने प्रधानमंत्री टी०बी० मुक्त भारत अभियान के तहत 23 मार्च, 2023 को नि–क्षय मित्र के रूप में अपना निबंधन कराया।

उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री टी०बी० मुक्त भारत अभियान के तहत भारत से वर्ष 2025 तक टी०बी० उन्मूलन का लक्ष्य है। इस अभियान के तहत नि–क्षय मित्र बनकर कोई भी व्यक्ति इलाजरत टी०बी० रोगी को गोद लेकर उसे अतिरिक्त नैदानिक, पोषण और व्यावसायिक सहायता पहुँचा सकता है। ■

सर्वाइकल कैंसर का समय रहते हो परीक्षण

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने माँ वैष्णो देवी सेवा समिति, पटना के तत्वावधान में संचालित माँ ब्लड सेंटर की स्थापना की पहली वर्षगाँठ के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि रेडक्रॉस सोसायटी के माध्यम से आधुनिक सुविधाओं से युक्त एम्बुलेंस बिहार के सभी जिलों को उपलब्ध कराये जा सकते हैं तथा आवश्यकतानुसार राज्य के विभिन्न स्थानों पर ब्लड बैंक की व्यवस्था भी की जा सकती है।

उन्होंने हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल के रूप अपने कार्यों की जानकारी एवं अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि वहाँ रेडक्रॉस सोसायटी के माध्यम से सर्वाइकल कैंसर डिटेक्शन यूनिट लगवाया गया है। उन्होंने इस बीमारी के समय रहते परीक्षण कराने पर जोर देते हुए कहा कि डिटेक्शन यूनिट को मोबाइल वैन द्वारा गाँवों में ले जाकर महिलाओं का सर्वाइकल कैंसर का परीक्षण कराने से काफी लाभ मिलेगा।

राज्यपाल ने मशक्यूलर डिस्ट्रॉफी नामक लाइलाज बीमारी एवं हिमाचल प्रदेश के सोलन में स्थित इस बीमारी से संबंधित पुर्नवास केन्द्र की चर्चा करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री से इसके बारे में बताने पर उन्होंने इसका विस्तृत विवरण माँगा तथा अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में इसका उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने इस बीमारी के विषय में अनुसंधान एवं इसके इलाज के संबंध में आवश्यक कार्रवाई करने का आश्वासन भी दिया है। ■

माँ ब्लड सेंटर की पहली वर्षगाँठ पर आयोजित कार्यक्रम में राज्यपाल (26 फरवरी, 2023)

रोहतास के बिक्रमगंज में आयोजित वर्ष प्रतिपदा कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर (28 मार्च, 2023)

भारत को विश्वगुरु बनाने के लिए स्व–जागरण जरूरी

भारत को विश्वगुरु बनाने के लिए स्व–जागरण की जरूरत है। स्व के प्रचार–प्रसार से ही हमारा देश विश्वगुरु बन सकता है। स्व–जागरण, स्व–इतिहास, स्व–संस्कृति, स्व–संस्कार एवं स्व–व्यवहार की जरूरत है। स्वदेश का भाव होगा तभी हमारा देश विश्वगुरु बनेगा।

रोहतास के बिक्रमगंज के तेंदुनी, काली स्थान में 28 मार्च, 2023 को हिन्दू नववर्ष समिति की ओर से आयोजित वर्ष प्रतिपदा कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने हिन्दू नववर्ष को वर्ष प्रतिपदा बताते हुए कहा कि चैत शुक्ल पक्ष को वर्ष प्रतिपदा कहते हैं। चैत शुक्ल पक्ष से ही हिन्दू नववर्ष का आगमन होता है। जब हमारे पड़ोसी देश नेपाल में कालगणना हिन्दू पद्धति से होती है तो हम ऐसा क्यों नहीं कर सकते हैं? उन्होंने लोगों को याद दिलाते हुए कहा कि स्वामी विवेकानन्द शिकागो धर्म संसद में शस्त्र लेकर नहीं, बल्कि शास्त्र लेकर गए थे और पूरी दुनिया ने उनका लोहा माना।

राज्यपाल ने कवि इकबाल की कविता का चित्रण करते हुए कहा, 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा'। उन्होंने कहा कि आज का यह कार्यक्रम कालगणना के अनुसार हिन्दू पद्धति को उजागर करता है। वर्तमान अंग्रेजी कालगणना ग्रिगेरियन पद्धति है, जबकि हमारी काल गणना शास्त्र के अनुसार है। अंग्रेजी काल गणना 150 वर्ष पूर्व यहां आई और इसे हमलोगों ने अपना लिया। हमारे यहां बलात किसी को अपने धर्म में लाने की संस्कृति नहीं रही है। हमने बाहर जाकर कहीं अत्याचार नहीं किया।

उन्होंने कहा कि आने वाला 25 साल हिन्दुस्तान का अमृतकाल है। देश की आजादी के सौ वर्ष पूरा होते–होते भारत को विश्वगुरु बनने से कोई नहीं रोक सकेगा। ■

साहित्य उद्‌बोधन और प्रबोधन का साधन – राज्यपाल

चन्द्रगुप्त साहित्य महोत्सव

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने स्काउट एण्ड गाइड परिसर, पटना में 25 मार्च, 2023 को आयोजित 'चन्द्रगुप्त साहित्य महोत्सव' के उद्‌घाटन सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि साहित्य केवल मनोरंजन का ही विषय नहीं है, बल्कि यह उद्‌बोधन और प्रबोधन का साधन भी है। उन्होंने सक्षम और समर्थ साहित्यिक कृतियों को सामने लाने की आवश्यकता बताई।

दीप प्रज्वलित कर महोत्सव का उद्‌घाटन करते हुए महामहिम (25 मार्च, 2023)

राज्यपाल ने कहा कि साहित्य समाज का दर्पण होता है तथा पुराने साहित्य तत्कालीन समय की स्थिति से हमें अवगत कराते हैं।

उन्होंने पुस्तकों के अध्ययन की जरुरत पर बल देते हुए कहा कि बच्चों और अभिभावकों को भी इसकी आदत डालनी चाहिए। साथ ही, उन्होंने घरों में सद्‌साहित्यों को रखने एवं पढ़ने की आवश्यकता बताई। राज्यपाल ने इस अवसर पर पुस्तकों के विभिन्न स्टॉल का अवलोकन किया।

इस अवसर पर बी० एन० मंडल विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो० अमरनाथ सिन्हा, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख श्री सुनील आंबेकर, विधान पार्षद प्रो० राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, इतिहास संकलन योजना के राष्ट्रीय संगठन मंत्री डॉ० बालमुकुन्द पांडेय, नालंदा विश्वविद्यालय की डॉ० स्मिता सिंह सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे। ■

पूरी मानवता बिहार की विभूतियों का ऋणी है – राज्यपाल

बिहार दिवस समापन समारोह

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 24 मार्च, 2023 को गाँधी मैदान, पटना में आयोजित बिहार दिवस समापन समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि बिहार की अनेकानेक विभूतियों ने इसे पावन बनाया है और पूरी मानवता उनका ऋणी है। उन्होंने कहा कि बिहार गीत में इस राज्य का इतिहास और इसकी सारी खूबियाँ समाहित हैं। बिहार वास्तव में भारत का कंठहार है।

इस वर्ष बिहार दिवस के थीम 'युवा शक्ति, बिहार की प्रगति' को प्रासंगिक बताते हुए उन्होंने कहा कि बिहार का भविष्य युवाओं पर निर्भर है और यह कार्यक्रम युवा शक्ति का जागरण है। उन्होंने कहा कि जब–जब युवा शक्ति जागृत होती है तब–तब समग्र क्रांति होती है। जय प्रकाश नारायण ने युवा शक्ति का ही आह्‌वान किया था।

बिहार दिवस 2023 के समापन समारोह में लोगों को संबोधित करते हुए महामहिम (24 मार्च, 2023)

राज्यपाल ने युवा शक्ति को सही मार्गदर्शन देने की आवश्यकता बताते हुए कहा कि युवाओं की दिशा एवं सोच से ही भविष्य का निर्माण होगा। उन्होंने युवाओं से पूरी शक्ति से बिहार को समृद्ध बनाने हेतु संकल्प लेने का आह्‌वान किया। उन्होंने युवाओं से प्रधानमंत्री टी०बी० मुक्त भारत अभियान को सफल बनाने में सक्रिय भूमिका निभाने को भी कहा।

इस अवसर पर राज्यपाल ने बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा स्थापित पैवेलियन का परिभ्रमण किया तथा इको फ्रेंडली गाड़ियों को हरी झंडी दिखाकर गया होते हुए शांति निकेतन के लिए रवाना किया। ■

शिक्षा का उद्देश्य

अच्छा व्यक्ति तैयार करना – राज्यपाल

पाटलिपुत्र वि.वि. के प्रथम स्थापना दिवस समारोह को संबोधित करते हुए राज्यपाल (19 मार्च, 2023)

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 19 मार्च, 2023 को ए०एन० कॉलेज, पटना के ऑडिटोरियम में आयोजित पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय के प्रथम स्थापना दिवस समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि शिक्षा हमारे समाज का दर्पण है। आज हम अपने बच्चों को जैसी शिक्षा दे रहे हैं, उसी के अनुरूप आनेवाला कल होगा। हमारे बच्चे क्या सोचते और करते हैं, कैसा बर्ताव करते हैं, यह हमारी जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि समाज के लिए अच्छा व्यक्ति तैयार करना ही शिक्षा का उद्देश्य है। एक अच्छा व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में बेहतर कर सकता है। उन्होंने कहा कि शिक्षा के विकास के लिए हम सब को साथ मिलकर कार्य करना होगा ताकि भावी पीढ़ी हमें दोषी नही ठहराए। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 को अपनाने की भी आवश्यकता बताई।

राज्यपाल ने कहा कि आज हमारा देश अलग तरीके से सोच रहा है। हमारी संस्कृति काफी पुरानी है और इसे अनेकानेक महापुरुषों ने समृद्ध बनाया है। हमें उनके पदचिन्हों पर चलने की जरूरत है। उन्होंने हिन्दू संस्कृति की कुछ गलतियों को विकृति बताते हुए कहा कि हमें सकारात्मक सोच के साथ आपस में मिलकर इन्हें दूर करना है। उन्होंने कहा कि हम उदात्त विचारों के बल पर दुनिया के लोगों का हृदय जीतकर ही विश्व गुरु बन सकते हैं। भारत को हमें इतना विकसित करना होगा कि यह सोने की चिड़ियाँ नही, बल्कि सोने का शेर बन सके। आगामी 25 वर्षों के अमृत काल में हमें देश को विकसित करने के लिए हरसंभव प्रयास करने की आवश्यकता है।

राज्यपाल ने विगत 05 वर्षो में पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय द्वारा प्राप्त की गई उपलब्धियों की सराहना की। उन्होंने संगीत, नृत्य एवं वाद्य वादन की विभिन्न विधाओं एवं खेलकूद प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करनेवाले छात्र–छात्राओं को पुरस्कृत किया। राज्यपाल ने इन्हें राजभवन में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित भी किया।

कार्यक्रम को शिक्षा मंत्री डॉ० चन्द्रशेखर ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० आर०के० सिंह, पटना विश्वविद्यालय एवं नालन्दा खुला विश्वविद्यालय के कुलपतिगण, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो० गणेश महतो, अधिषद, अभिषद एवं विद्वत परिषद् के सदस्यगण, विभिन्न संकायों एवं स्नातकोत्तर विभागों के अध्यक्ष, महाविद्यालयों के प्रधानाचार्य, विश्वविद्यालय के पदाधिकारीगण, शिक्षकगण, कर्मचारीगण एवं अन्य लोग उपस्थित थे। ■

विद्यार्थियों को पुरस्कृत करते महामहिम (19 मार्च, 2023)

ग्रामीण क्षेत्रों में भी जाएं चिकित्सक

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 18 मार्च, 2023 को होटल मौर्या, पटना में आयोजित स्तन कैंसर से संबंधित अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला ABSI MIDCON –2023 को संबोधित करते हुए कहा कि चिकित्सक सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में जाएँ और मरीजों के स्वास्थ्य की देखभाल और उनकी चिकित्सा में मदद करें। इस तरह के कार्यक्रमों की सार्थकता तभी है जब हम गाँवों की गरीब महिलाओं के बीच जाकर उन्हें स्तन कैंसर जैसी बीमारियों के बारे में जागरूक कर उनके इलाज में सहयोग करते हैं। उन्होंने कहा कि कार्यशाला में विचार किया जाना चाहिए कि स्तन कैंसर की चिकित्सा से संबंधित नई तकनीकों और अनुसंधानों का लाभ ग्रामीण महिलाओं को कैसे मिले।

राज्यपाल ने खुशी और संतोष व्यक्त किया कि विदेशों में रहनेवाले भारतीय चिकित्सक यहाँ आकर स्तन कैंसर की चिकित्सा के बारे में विचार–विमर्श कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि

दीप प्रज्वलित कर कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए महामहिम (18 मार्च, 2023)

अब सभी लोग ऐसा महसूस कर रहे हैं कि हरेक बीमारी के लिए सतर्कता एवं जागरूकता आवश्यक है। खराब जीवन शैली को स्तन कैंसर सहित अन्य विभिन्न बीमारियों का महत्वपूर्ण कारण बताते हुए उन्होंने कहा कि जीवन में संयम आवश्यक है।

कार्यक्रम में राज्यपाल को स्मृति चिन्ह एवं अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया गया। उन्होंने उत्कृष्ट शल्य चिकित्सकों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित भी किया।

इस अवसर पर ABSI MIDCON के चेयरमैन डॉ० सुमंत्रा सरकार, सचिव डॉ० बी०पी० सिंह, ABSI MIDCON के प्रेसिडेंट डॉ० एस०बी०एस० देव, एम्स, पटना के निदेशक डॉ० जी०के० पाल, ASI, Bihar के प्रेसिडेंट डॉ० मृत्युंजय, पद्मश्री डॉ० जे०के० सिंह एवं अन्य लोग उपस्थित थे। ■

रेड क्रॉस भवन पटना में विभिन्न सेवाओं का उद्घाटन

'नर सेवा ही नारायण सेवा'

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 24 मार्च, 2023 को रेड क्रॉस भवन, पटना में रेड क्रॉस फिजियोथेरेपी यूनिट, मल्टीपर्पस कॉन्फ्रेंस हॉल एवं एलिवेटर का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि रेड क्रॉस की स्थापना ही लोगों की मदद के लिए हुआ है। महामहिम ने बताया कि 'नर सेवा ही नारायण सेवा है' और यही काम रेड क्रॉस

रेड क्रॉस भवन की विभिन्न सेवाओं का उद्घाटन करते हुए महामहिम (24 मार्च, 2023)

फिजियोथेरेपी यूनिट, मल्टीपर्पस कॉन्फ्रेंस हॉल एवं एलिवेटर का उद्घाटन

द्वारा किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि 'रेड क्रॉस' की मदद के लिए राजभवन हमेशा तैयार है।

उन्होंने रेड क्रॉस से युवाओं को जोड़ने पर बल देते हुए कहा कि इससे जुड़ी सुविधाओं को गाँव–गाँव तक पहुँचाया जाना चाहिए। राज्यपाल ने प्रधानमंत्री टी०बी० मुक्त भारत अभियान को सफल बनाने हेतु इंडियन रेड क्रॉस सोसाईटी की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने को कहा।

इस अवसर पर राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री रॉबर्ट एल. चोंग्थू, रेड क्रॉस सोसाईटी के बिहार स्टेट ब्रांच की चेयरमैन डॉ० वी०बी० सिन्हा तथा बिहार के विभिन्न जिला शाखाओं से आए पदाधिकारीगण एवं अन्य लोग उपस्थित थे। ■

मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार को अबीर लगाकर होली की शुभकामनाएं देते हुए महामहिम, विधायकों ने भी उन्हें होली की बधाई दी (06 मार्च, 2023)

पटना में पूर्व सांसद श्री आर०के० सिन्हा के आवास पर आयोजित 'होली मिलन समारोह' में राज्यपाल (05 मार्च, 2023)

राजभवन को लोकभवन बनाने का करेंगे प्रयास – आर्लेकर

अभिव्यक्ति

बिहार के महामहिम राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने कहा कि उनका प्रयास राजभवन को लोकभवन में बदलने का होगा, जहाँ लोगों की पहुँच सुगम हो। बातचीत के दौरान उन्होंने बिहार में नीतीश कुमार नीत गैर–भाजपा सरकार के साथ टकराव की किसी भी संभावना से इनकार किया। गोवा निवासी श्री आर्लेकर इससे पहले हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल थे। बिहार में नीतीश कुमार नीत गठबंधन सत्ता में है। आर्लेकर ने कहा, 'मुझे फिलहाल किसी टकराव की कोई वजह नजर नहीं आती। सरकार में सभी लोग समझदार हैं। मैं अपनी सीमाएं समझता हूं और वे अपनी। अगर दोनों पक्षों में परस्पर समझ है, तो मुझे कोई कारण नहीं दिखता कि टकराव होगा।'

उन्होंने कहा, 'आज की जरूरत है कि हमें लोगों के पास जाना चाहिए और उन्हें राजभवन आमंत्रित करना चाहिए।' उन्होंने कहा कि राज्यपाल को लोगों के मुद्दों पर चर्चा करनी चाहिए। लोगों के मन में राज्यपाल के प्रति काफी सम्मान होता है और इसका सम्मान किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा, 'राजभवन को लोकभवन में बदलना होगा। लोगों को यह महसूस होना चाहिए कि वह मेरे राज्यपाल हैं और यह मेरा राजभवन है। मैं ऐसा करने का प्रयास करूंगा। मुझे नहीं पता कि पहले के राज्यपाल ने ऐसा किया था या नहीं। मैंने हिमाचल प्रदेश में भी ऐसा किया और मुझे बिहार में भी ऐसा करना चाहिए।'

राजनीतिक रूप से संवेदनशील राज्य बिहार के बारे कहा, 'मुझे नहीं लगता कि यह राजनीतिक रूप से बहुत अस्थिर राज्य है। मुझे इस पर प्रतिक्रिया देने की जरूरत नहीं है। चाहे वह हिमाचल प्रदेश हो या कोई और राज्य, मुझे बिना किसी राजनीतिक घटनाक्रम पर विचार किए केवल काम करना है।' उन्होंने कहा कि अगर कोई राजनीतिक घटनाक्रम है, जिन पर उन्हें ध्यान देने की जरूरत है, तो चीजें भिन्न होंगी। बिहार का राज्यपाल नियुक्त किए जाने पर प्रतिक्रिया पूछे जाने पर श्री आर्लेकर ने कहा कि प्रतिक्रिया केवल राज्य के लोगों की होगी। उन्होंने कहा, बिहार के लोगों का राज्यपाल एक नया व्यक्ति होगा। यही एकमात्र बदलाव है। पहले मैं हिमाचल प्रदेश में काम कर रहा था और अब बिहार में काम कर रहा हूँ। ■

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू से नई दिल्ली में शिष्टाचार मुलाकात की (28 फरवरी, 2023)

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी से नई दिल्ली में शिष्टाचार मुलाकात की (28 फरवरी, 2023)

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर से माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने राजभवन आकर शिष्टाचार मुलाकात की (30 मार्च, 2023)

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर से पटना उच्च न्यायालय के माननीय कार्यकारी मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री चक्रधारी शरण सिंह ने राजभवन पहुँचकर शिष्टाचार मुलाकात की (21 फरवरी, 2023)

राज्यपाल से बिहार लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष ने शिष्टाचार मुलाकात की (23 फरवरी, 2023)

राज्यपाल ने मंत्रियों, सांसदों, विधान पार्षदों एवं विधायकों से मुलाकात की (15 मार्च, 2023)

महालेखाकार ने राजभवन में महामहिम से शिष्टाचार मुलाकात की (21 फरवरी, 2023)

राज्यपाल से बिहार चैम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इंडस्ट्रीज के शिष्टमंडल ने मुलाकात की (03 मार्च, 2023)

राज्यपाल से भारतीय पुलिस सेवा के प्रशिक्षु पदाधिकारियों ने मुलाकात की (07 मार्च, 2023)

राज्यपाल से भारतीय विदेश सेवा के 06 प्रशिक्षु अधिकारियों ने की शिष्टाचार मुलाकात (28 मार्च, 2023)

राज्यपाल से पी०आई०बी०, आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं केन्द्रीय संचार ब्यूरो के अधिकारियों ने मुलाकात की (20 मार्च, 2023)

महाराष्ट्र बोर्ड के एक प्रतिनिधिमंडल ने महामहिम से मुलाकात की (26 फरवरी, 2023)

चैत्र नवरात्र के अवसर पर ध्वज पूजन कर समस्त बिहारवासियों के सुख, समृद्धि एवं सौभाग्य की कामना करते हुए राज्यपाल (22 मार्च, 2023)

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने खाजपुरा, पटना स्थित शिव मंदिर के निकट महाशिवरात्रि शोभा यात्रा के अभिनन्दन महोत्सव में भाग लिया तथा भगवान शिव एवं माँ पार्वती की आरती कर बिहारवासियों के सुख, शांति एवं समृद्धि हेतु प्रार्थना की। आयोजकों ने उन्हें अंगवस्त्र एवं प्रतीक चिह्न भेंटकर उनका अभिनन्दन किया। (18 फरवरी, 2023)

बहादुरी की प्रशंसा

महामहिम राज्यपाल ने बिहार के मूल निवासी एवं सरकारी प्राथमिक विद्यालय, कुम्भाजुआ, गोवा की चौथी कक्षा के दस वर्षीय छात्र अंकुरकुमार संजय प्रसाद द्वारा अपने तीन मित्रों को नदी में डूबने से बचाकर उनकी प्राणरक्षा करने पर उसके साहस और बहादुरी की प्रशंसा की। (29 मार्च, 2023)

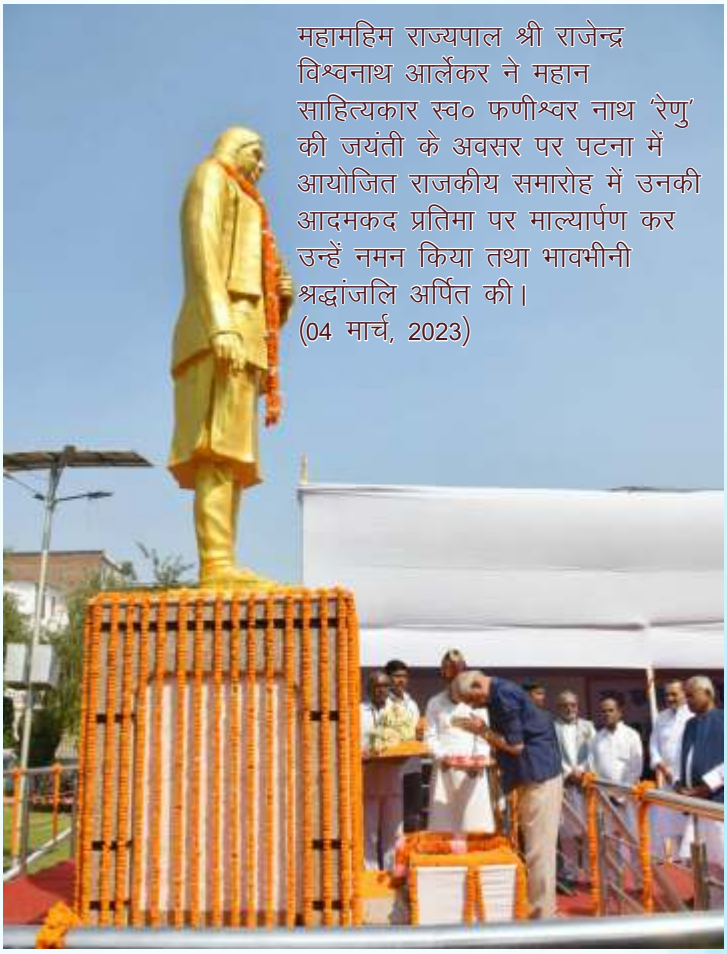

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने महान साहित्यकार स्व० फणीश्वर नाथ 'रेणु' की जयंती के अवसर पर पटना में आयोजित राजकीय समारोह में उनकी आदमकद प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया तथा भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।
(04 मार्च, 2023)

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने शहीद जुब्बा सहनी की पुण्य तिथि के अवसर पर पटना में आयोजित राजकीय समारोह में उनकी आदमकद प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया तथा भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।
(11 मार्च, 2023)

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने प्रखर समाजवादी नेता डॉ० राम मनोहर लोहिया के जन्म दिवस के अवसर पर पटना में आयोजित राजकीय समारोह में उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया तथा भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।
(23 मार्च, 2023)

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने महान शासक सम्राट अशोक के जन्म दिवस के अवसर पर पटना में आयोजित राजकीय समारोह में उनकी सांकेतिक प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया तथा भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।
(29 मार्च, 2023)

नालंदा विश्वविद्यालय

शिक्षा की गौरवशाली विरासत

एक समय बिहार के बल पर भारत विश्व गुरु कहलाता था। बिहार के विक्रमशिला के साथ ही नालंदा विश्वविद्यालय प्राचीन काल में शिक्षा का एक प्रमुख केंद्र था। नालंदा विश्वविद्यालय को दुनिया का सबसे प्राचीन विश्वविद्यालय माना जाता है। यह विश्व का प्रथम पूरी तरह से आवासीय विश्वविद्यालय था। यहां भारत ही नहीं, दुनिया भर से छात्र अध्ययन करने के लिए आते थे।

अपनी शिक्षा के लिए विश्व विख्यात नालंदा विश्वविद्यालय में बौद्ध धर्म के साथ ही अन्य धर्मों के छात्र अध्ययन करते थे। यहां चीन, जापान, कोरिया, तिब्बत, इंडोनेशिया, फारस और तुर्की के छात्र भी शिक्षा ग्रहण के लिए आते थे। लेकिन यहां प्रवेश के लिए उन्हें कड़ी परीक्षा देनी होती थी। बताया जाता है कि विश्वविद्यालय में छः द्वार थे और हर द्वार पर एक द्वार पंडित होते थे। नामांकन से पहले द्वार पंडित छात्रों की परीक्षा लेते थे। उनकी परीक्षा में सफल छात्रों को ही अंदर जाने की अनुमति होती थी। चीनी भ्रमणकारी ह्वेनसांग और इत्सिंग ने नालंदा में ही शिक्षा ग्रहण की थी।

10 हजार विद्यार्थियों के लिए थे दो हजार अध्यापक

उस दौर में उच्च शिक्षा के सबसे प्रमुख केंद्र नालंदा विश्वविद्यालय में 10 हजार विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए करीब दो हजार अध्यापक थे। यहां साहित्य, ज्योतिष विज्ञान, मनोविज्ञान, कानून एवं खगोल विज्ञान समेत इतिहास, गणित, भाषा विज्ञान, अर्थशास्त्र और चिकित्सा शास्त्र जैसे कई विषयों की पढ़ाई होती थी। बताया जाता है कि नालंदा विश्वविद्यालय या महाविहार एक बड़ा बौद्ध मठ था। यह भी बताया जाता है कि भगवान बुद्ध यहां कई बार आए थे। इस कारण यह पांचवी से बारहवीं शताब्दी में बौद्ध शिक्षा का एक प्रमुख केंद्र रहा। अब यहां सिर्फ खंडहर बचा है। इस विश्वविद्यालय के भग्नावशेष को देखकर आज भी इसके प्राचीन वैभव का अंदाजा लगाया जा सकता है।

विश्व धरोहर घोषित

नालंदा विश्वविद्यालय के अवशेष को यूनेस्को ने विश्व धरोहर स्थल घोषित किया हुआ है। अब तक की खुदाई में लगभग 14 हेक्टेयर में इस विश्वविद्यालय के अवशेष मिले हैं। यहां सिर्फ छात्रों के लिए 300 से अधिक कक्ष बने हुए थे। नालंदा विश्वविद्यालय के साथ म्यूजियम, नव नालंदा महाविहार और ह्वेनसांग मेमोरियल यहाँ दर्शनीय हैं।

इस विश्वविद्यालय की स्थापना गुप्त शासक कुमारगुप्त ने पांचवी शताब्दी के 450 ईसवीं में की थी। गुप्तवंश के बाद भी सभी शासकों ने इसकी समृद्धि में अपना योगदान जारी रखा। सम्राट अशोक तथा हर्षवर्धन ने यहां सबसे ज्यादा मठों, विहारों तथा मंदिरों का निर्माण करवाया था। बताया जाता है कि भगवान बुद्ध ने सम्राट अशोक को यहीं पर उपदेश दिया था।

बख्तियार खिलजी ने जला कर किया खाक

नालंदा विश्वविद्यालय को नौवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक दुनियाभर में खूब प्रसिद्धि मिली, लेकिन विदेशी आक्रमणकारी बख्तियार खिलजी ने 1199 ईस्वी के आसपास यहां हमला कर इसे पूरी तरह से नष्ट कर दिया। विक्रमशिला की तरह इसके पुस्तकालय को भी आग लगा दी गई। बताया जाता है कि पुस्तकालय में इतनी किताबें और पांडुलिपियां थीं कि तीन महीने से ज्यादा तक आग दहकती रही।

इस विश्वविद्यालय को नष्ट करने के क्रम में बख्तियार खिलजी ने एक हजार से ज्यादा बौद्ध भिक्षुओं को जिंदा जला दिया और करीब इतने ही भिक्षुओं के सिर कलम कर दिए। भारतीय ज्ञान भंडार को नष्ट करने के साथ ही भारतीय सभ्यता–संस्कृति को नष्ट करने में विदेशी आक्रमणकारियों का बहुत बड़ा हाथ रहा है। ■

अनुशासन का अर्थ बंधन नहीं, बल्कि मर्यादा होता है – राज्यपाल

दीक्षांत समारोह में छात्र–छात्राओं को संबोधित करते हुए महामहिम (28 मार्च, 2023)

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 28 मार्च, 2023 को पटना वीमेंस कॉलेज के वेरॉनिका ऑडिटोरियम में आयोजित पटना विश्वविद्यालय के वार्षिक दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए उपाधि प्राप्त करने वाले छात्र–छात्राओं से कहा कि जीवन में सफल होने के लिए हर क्षेत्र में अनुशासन जरूरी है। उनके आचरण एवं क्रियाकलापों से यह परिलक्षित होना चाहिए कि उन्होंने एक प्रतिष्ठित संस्थान में विद्यार्जन किया है। उन्होंने कहा कि अनुशासन का अर्थ बंधन नहीं, बल्कि मर्यादा होता है और हमें इसका पालन करना चाहिए।

राज्यपाल ने कहा कि बच्चों को उनके लक्ष्य के बारे में स्पष्टता होनी चाहिए। उन्होंने शिक्षा पद्धति में बदलाव की जरूरत पर बल देते हुए कहा कि शिक्षा का उद्देश्य समाज एवं देश की आवश्यकताओं के अनुरूप योग्य नागरिक तैयार करना होना चाहिए। शिक्षा वैसी होनी चाहिए जो हमारे बच्चों को उनके पैरों पर खड़ा होने में मदद करे तथा समाज और देश की मिट्टी से उन्हें जोड़कर रखे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 को अपनाने पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि यह इन उद्देश्यों को पूरा करने में सक्षम है।

राज्यपाल ने दीक्षांत समारोह में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए 79 छात्र–छात्राओं को परीक्षा में स्वर्ण पदक से सम्मानित किया। साथ ही, उन्होंने पीएच०डी० तथा स्नातकोत्तर की डिग्रियाँ भी प्रदान की। उन्होंने उपाधि प्राप्त करने वाले छात्र–छात्राओं को भविष्य की शुभकामनाएँ देते हुए विश्वास व्यक्त किया कि वे अपने माता–पिता, अभिभावकों तथा गुरुजनों की उम्मीदों को पूरा करेंगे।

दीक्षांत समारोह में महामहिम का स्वागत (28 मार्च, 2023)

यूनिवर्सिटी टॉपर्स के साथ महामहिम (28 मार्च, 2023)

कार्यक्रम में राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री रॉबर्ट एल० चोंग्थू, शिक्षा विभाग के सचिव श्री वैद्यनाथ यादव, आई०आई०टी०, पटना के निदेशक प्रो० त्रिलोकी नाथ सिंह, पटना विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० गिरीश कुमार चौधरी एवं प्रतिकुलपति प्रो० अजय कुमार सिंह सहित अन्य उपस्थित थे।

■

छपरा में सीनेट की बैठक को संबोधित करते हुए महामहिम (14 मार्च, 2023)

सामूहिक प्रयास से ही शिक्षा में सुधार - राज्यपाल

> "शैक्षणिक संस्थानों की स्थिति केवल कागजी आदेशों से ही नहीं सुधरेगी बल्कि इसके लिए कठोर निर्णय लिये जाएँगे। इससे कुछ लोगों को निराशा भी हो सकती है"

महामहिम राज्यपाल–सह–कुलाधिपति श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 14 मार्च, 2023 को जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा में आयोजित अधिषद (सीनेट) की बैठक की अध्यक्षता करते हुए कहा कि शिक्षा समाज की संस्कृति का द्योतक होता है और हम सब संस्कृति के रक्षक हैं। अतः बिहार की शिक्षा व्यवस्था में हम सबको मिलकर सुधार लाने की आवश्यकता है।

उच्च शिक्षा के लिए बिहार से बाहर जाने की छात्रों की विवशता के संबंध में उन्होंने कहा कि इसके लिए यहाँ की शिक्षा व्यवस्था जिम्मेदार है। उन्होंने अधिषद के सदस्यों की भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा कि उनपर विद्यार्थियों के भविष्य को सँवारने का दायित्व है। विद्यार्थी भविष्य के सपने लेकर विश्वविद्यालय में आते हैं और हमसे उनकी काफी अपेक्षाएँ होती हैं। उन्होंने कहा कि अधिषद की बैठक में केवल बजट ही पारित नहीं किया जाना चाहिए बल्कि विश्वविद्यालय की शिक्षा व्यवस्था पर भी विचार किया जाना चाहिए।

राज्यपाल ने बिहार की शिक्षा व्यवस्था में सुधार हेतु शैक्षिक अराजकता और भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए कठोर निर्णय लेने की आवश्यकता बतायी। उन्होंने कहा कि शैक्षणिक संस्थानों की स्थिति केवल कागजी आदेशों से ही नहीं सुधरेगी बल्कि इसके लिए कठोर निर्णय लिये जाएँगे। इससे कुछ लोगों को निराशा भी हो सकती है।

राज्यपाल के छपरा पहुँचने पर उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। ततपश्चात् उन्होंने लोकनायक जयप्रकाश नारायण की आदमकद प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया।

राज्यपाल की अध्यक्षता में आयोजित अधिषद की बैठक में जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा के कुलपति, प्रतिकुलपति, राज्यपाल के प्रधान सचिव, विशेष पदाधिकारी (विश्वविद्यालय), अधिषद के सदस्यगण एवं अन्य लोग उपस्थित थे। ■

जयप्रकाश नारायण की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए महामहिम (14 मार्च, 2023)

आनेवाली पीढ़ी का दायित्व हमारा : कुलाधिपति

कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा के सीनेट हॉल में आयोजित 46वें अधिषद की बैठक को संबोधित करते हुए महामहिम राज्यपाल–सह–कुलाधिपति श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने कहा कि शैक्षणिक व्यवस्था में सुधार लाना हमारा सामूहिक दायित्व है। इसके लिए उन्होंने सीनेट की विशेष बैठक आयोजित करने को कहा।

बल्कि शिक्षण संस्थानों की शैक्षणिक व्यवस्था में सुधार के लिए विचार करना भी है। इसलिये उनका मानना है कि शिक्षा में सुधार के लिए अलग से सीनेट की बैठक आयोजित हो जिसमें सब मिलकर केवल शैक्षणिक वातावरण की बेहतरी पर ही चर्चा करें। उन्होंने यह भी कहा कि सीनेट की उस विशेष बैठक में वह स्वयं भी उपस्थित रहेंगे।

महामहिम ने कहा कि सूबे की 13 करोड़ आबादी पर उन्हें गर्व है। यहां के कौशल्य पर

कि राजभवन, राज्य सरकार व विद्वतजन को मिलकर एक नया शैक्षणिक वातावरण बनाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि उन्हें राजभवन में आये एक माह हो गया है और ईमेल, फेसबुक एवं ट्विटर सहित अन्य माध्यमों से भी विश्वविद्यालयों में सुधार के लिए सुझाव मिल रहे हैं। उन्होंने कहा कि वह स्वयं विश्वविद्यालयों में जाकर वहाँ की गतिविधियों का अनुश्रवण भी कर रहे हैं।

कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय में आयोजित सीनेट की बैठक को संबोधित करते हुए महामहिम (26 मार्च, 2023)

उन्होंने विश्वविद्यालय में अलग से पेंशन सेल का गठन करने तथा शिक्षकों, पदाधिकारियों, कर्मियों एवं छात्र–छात्राओं की बायोमेट्रिक उपस्थिति सुनिश्चित कराने का निदेश दिया।

उन्होंने कहा कि यह विद्वत सभा है। सीनेट का कार्य सिर्फ बजट पास करना ही नहीं,

भी उन्हें नाज है। उन्होंने कहा कि बिहार के लोग बोझ नहीं, बल्कि बोझ उठाने वाले हैं। फिर भी यहां के बच्चे दूसरे प्रदेशों में जाकर पढ़ाई करने को मजबूर हैं। इस पर हमें चिंतन करने की जरूरत है। इसमें बच्चों का कोई दोष नहीं है, क्योंकि आनेवाली पीढ़ी को संवारने का दायित्व हमारा है। उन्होंने कहा

महामहिम ने कहा कि मिथिला की ज्ञान परम्परा का गौरवपूर्ण इतिहास रहा है। हमें उसे याद कर वर्तमान व भविष्य की चिंता करनी चाहिए। हम सब के प्रयास से ही इस विश्वविद्यालय का नाम पूरे देश में रौशन होगा।

■

'आराम करने राजभवन नहीं आया'

पूर्णिया विश्वविद्यालय में 18 मार्च, 2023 को सीनेट की बैठक की अध्यक्षता करते हुए महामहिम राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने कहा कि उन्हें बिहार का राज्यपाल बनकर आए एक महीना बीत चुका है। वह राजभवन में आराम करने नहीं, काम करने आए हैं।

उन्होंने कहा कि हमें मिलकर कार्य करना है। वह चाहते हैं कि लोग उनसे मिलकर अपना सुझाव दें। एक महीने में करीब 400 लोग उनसे मिले हैं जिनमें से अधिकांश लोगों ने प्रदेश की शिक्षा के बारे में चिंता व्यक्त की है।

पूर्णिया विश्वविद्यालय की सीनेट की बैठक को संबोधित करते हुए राज्यपाल (18 मार्च, 2023)

उन्होंने कहा कि शिक्षा में सुधार के लिए समेकित प्रयास और नई पहल की जरूत है। शिक्षा में सुधार का अर्थ भविष्य को संवारना है।

शिक्षा व्यवस्था को लेकर चिंता

उन्होंने उच्च शिक्षा के लिए बिहार से बाहर जाने वाले बच्चों की विवशता को रेखांकित करते हुए कहा कि इसके लिए हमारी शैक्षणिक व्यवस्था जिम्मेदार है और इसे लेकर अभिभावक भी चिंतित हैं। हमें सामूहिक जिम्मेदारी लेकर इस दिशा में कार्य करना होगा। ■

पूर्णिया के एक गांव में किसानों के साथ राज्यपाल

किसान शशिभूषण सिंह के खेत में राज्यपाल (18, मार्च, 2023)

बिहार के राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर 17–18 मार्च, 2023 को अपने दो दिवसीय पूर्णिया दौरे के पहले दिन जिले के रानीपतरा के चांदी गांव में प्रगतिशील किसान शशि भूषण सिंह के खेत पर पहुँचे तथा उनके खेत में लगे गोभी, बिन्स, बैंगन, नेनुआ आदि की खेती को देखकर प्रसन्नता व्यक्त की। राज्यपाल ने वहां जैविक तरीके से की गई खेती का निरीक्षण किया तथा किसान शशि भूषण सिंह से इसके बारे में जानकारी हासिल की। साथ ही अन्य किसानों से भी बात की।

इस दौरान उन्होंने कहा कि किसानों को रासायनिक खादों की निर्भरता कम करनी चाहिए और जैविक खेती को बढ़ावा देनी चाहिए। उन्होंने कहा कि किसान शशि भूषण सिंह ने बेहतर कार्य किया है और इनसे अन्य किसानों को भी सीख लेने की जरूरत है। किसान श्री सिंह ने कहा कि उनके लिए यह गौरव का क्षण है कि राज्यपाल उनके खेत में पधारे। गांव में पहली बार राज्यपाल को देख कर ग्रामीणों में काफी खुशी थी। ■

जैविक गोभी की फसल देखते राज्यपाल (18, मार्च, 2023)

बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर

रेडियो रिवीजन : कृषि शिक्षा के लिए एक अनूठा रेडियो शो

बिहार के कृषि मंत्री श्री कुमार सर्वजीत ने बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर में छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन और कृषि शिक्षा तक पहुँच बढ़ाने के लिए सामुदायिक रेडियो स्टेशन 90.8 एफएम ग्रीन द्वारा परिकल्पित एक विशेष रेडियो कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

कुलपति डॉ. डी. आर. सिंह ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय अत्याधुनिक शैक्षिक सुविधाओं और परिणामोन्मुखी शैक्षिक वातावरण विकसित करने का प्रयास करेगा। "रेडियो रिवीजन" पहल का उद्देश्य छात्रों को कृषि ज्ञान प्राप्त करने और कुशल तरीके से परीक्षाओं की तैयारी करने में मदद करना है। यह देश में अपनी तरह की पहली पहल है जिसमें सेमेस्टर के दौरान पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रमों का एक घंटे का सारांश परीक्षा से एक दिन पहले शाम को प्रसारित किया जाएगा। कार्यक्रम का सीधा प्रसारण सामुदायिक रेडियो के साथ–साथ इंटरनेट के माध्यम से बिहार कृषि विश्वविद्यालय के वेबसाइट, रेडियो गार्डन और प्ले स्टोर पर उपलब्ध FM green app के माध्यम से किया जाएगा। देश भर के सभी इच्छुक कृषि छात्र और कृषि ज्ञान के जिज्ञासु इसे इंटरनेट रेडियो के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।

निदेशक प्रसार शिक्षा, डॉ. आर.के. सोहाने ने किसानों को जलवायु परिवर्तन के बारे में शिक्षित करने के लिए इस तरह के कार्यक्रमों की आवश्यकता बताई। सामुदायिक रेडियो स्टेशन के प्रभारी डॉ. पाटिल ने कहा कि रेडियो कार्यक्रम पहले से ही किसानों और ग्रामीण महिलाओं के साथ–साथ युवाओं की जरूरतों को पूरा कर रहा है तथा स्वास्थ्य, स्वच्छता व कृषि उत्पादन तकनीकों सहित कई विषयों पर जागरूकता पैदा कर रहा है। ■

बहुपोषक तत्व खाद का हुआ पेटेंट

बिहार कृषि विश्वविद्यालय को पहली बार मल्टी– न्यूट्रीएंट नैनोक्ले पॉलीमर कंपोजिट एंड प्रोसेस फॉर सिंथेसिस ऑफ़ सेम (एमएनसीपीसी) नामक बहुपोषक खाद को महानियंत्रक, पेटेंट डिजाइन व ट्रेडमार्क, भारत सरकार ने स्वीकृति दी है।

यह डॉ निंटू मंडल, सहायक प्रोफेसर, नैनोसाइंस और नैनो टेक्नोलॉजी यूनिट, मृदा विज्ञान और कृषि रसायन विज्ञान विभाग, बिहार कृषि महाविद्यालय, सबौर के नेतृत्व में वैज्ञानिकों की एक टीम द्वारा किए गए विश्वविद्यालय द्वारा वित्त पोषित अनुसंधान परियोजना का परिणाम है। एमएनसीपीसी में यूरिया, DAP, MoP, $ZnSO_4$ और $7H_2O$ जैसे पारंपरिक उर्वरकों की तुलना में उर्वरक आवश्यकताओं को 40 प्रतिशत तक कम करने की क्षमता है। विभिन्न प्रकार की फसलों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए MNCPC में अनुकूलित उर्वरक, नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटाश और जिंक के प्रतिशत में बदलाव किया जा सकता है। एमएनसीपीसी के विकास में शामिल टीम लीडर डॉ. मंडल के अनुसार बहु–पोषक नैनो क्ले कंपोजिट एक राइजोस्फीयर नियंत्रित रिलीज फॉर्मूलेशन (आरसीएफ) है।

इसका पेटेंट अधिकार विश्वविद्यालय को 9 जुलाई, 2020 से 20 वर्षों की अवधि के लिए प्रदान किया गया है। डॉ. डी आर सिंह, कुलपति, बीएयू ने एमएनसीपीसी के विकास में शामिल टीम के सदस्यों को बधाई दी और सुझाव दिया कि सभी संबंधित ऐसे और अनुसंधान उत्पाद विकसित करें जिनके लिए विश्वविद्यालय पेटेंट अधिकारों को सुरक्षित कर सके। ■

पूर्णिया विश्वविद्यालय

रक्त परीक्षण व एड्स जागरूकता अभियान

पूर्णिया विश्वविद्यालय, पूर्णिया के अन्तर्गत अंगीभूत महाविद्यालयों यथा–पूर्णिया कॉलेज, पूर्णिया, पूर्णिया महिला कॉलेज, पूर्णिया मारवाड़ी कॉलेज, किशनगंज, नेहरू कॉलेज, बहादुरगंज एवं सम्बद्ध महाविद्यालय जीरादेई शीतल साह महिला कॉलेज, फॉरबिसगंज में रक्तदान एवं रक्त परीक्षण अभियान चलाया गया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों ने एड्स जैसी घातक बीमारियों के बारे में ग्रामीण इलाकों में लोगों को जागरूक किया। कार्यक्रम पदाधिकारियों एवं स्वयंसेवकों ने रेड रिबन क्लब के ऐतिहासिक पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए युवाओं को बताया कि एड्स से बचाव ही एक मात्र उपाय है। स्वयंसेवकों द्वारा संचालित कार्यक्रम में ग्रामीणों ने बढ–चढ़ कर भाग लिया।

■

राष्ट्रीय संगोष्ठी

कौशल की महत्ता : हालिया रुझान

पूर्णिया विश्वविद्यालय, पूर्णिया (बिहार) के अधिषद् सभागार में वाणिज्य एवं प्रबंधन संकाय द्वारा एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 11 मार्च 2023 को "कौशल की महत्ता : हालिया रुझान" मुद्दे पर किया गया। ■

वाणिज्य एवं प्रबन्धन संकाय, पूर्णिया विश्वविद्यालय, पूर्णिया द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी (11 मार्च, 2023)

राष्ट्रीय संगोष्ठी में शामिल प्रतिभागी (11 मार्च, 2023)

पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय अन्तर महाविद्यालय सांस्कृतिक कार्यक्रम की झांकी

मंदारेश्वर काशी विश्वनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार का शिलान्यास

शिलान्यास कार्यक्रम में जनसमूह को संबोधित करते महामहिम (10 मार्च, 2023)

> ‘भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता रहा और अन्य देश इसे लूटते रहे। भारत के लिए इस विशेषण से मैं संतुष्ट नहीं हूँ। हमारा देश चिड़िया बनकर नहीं रहेगा, बल्कि सोने का शेर बनेगा’

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने बाँका जिलान्तर्गत बौंसी में अवस्थित मंदार पर्वत पर मंदारेश्वर काशी विश्वनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार का शिलान्यास किया। उन्होंने मधुसूदन मंदिर एवं गुरुधाम में पूजा–अर्चना भी की। इस अवसर पर पत्रकारों से बातचीत करते हुए राज्यपाल ने कहा कि मंदार पर्वत पर आकर शिलान्यास करना उनके लिए सौभाग्य की बात है। उन्होंने कहा कि यहाँ पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कार्य किये जा रहे हैं। इस स्थल को वर्ल्ड हेरिटेज के रूप में विकसित किया जाना चाहिए ।

इस अवसर पर अद्वैत मिशन स्कूल, बौंसी में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राज्यपाल ने कहा कि वह हिमाचल प्रदेश से बिहार आये हैं और यह राज्य भी उसी की भाँति देवभूमि है।

राज्यपाल ने कहा कि मंदिर के पुनर्निर्माण का अर्थ राष्ट्र जीवन का पुनर्निर्माण होता है। इस राष्ट्र का जीवन कुछ वर्षों से अंधेरे में रहा है, परन्तु इसका पुनर्निर्माण करने के लिए जब सभी जगह से राष्ट्र शक्तियाँ जागृत हो उठी हैं, तब मंदिर निर्माण होते रहेंगे। राष्ट्र निर्माण के इस कार्य में हमें सहभागी बनना है। उन्होंने कहा कि इस देश में जब–जब मंदिर निर्माण का कार्य होता है, तब उन्हें लगता है कि राष्ट्र निर्माण और राष्ट्र जीवन के हित की शुरूआत होती है।

उन्होंने कहा कि आज यहाँ केवल मंदिर निर्माण का नहीं बल्कि राष्ट्र भक्ति और जीवन शक्ति को जागृत करने हेतु महायज्ञ की शुरूआत हुई है और हमें इसमें सहभागी बनना चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने आगामी 25 वर्षों के लिए हमें अमृतकाल का संदेश दिया है। यह स्व–जागरण, स्व–संस्कृति, स्व–इतिहास और स्व–परंपरा को जागृत करने का समय है। अमृतकाल पुनर्निर्माण का समय है। इस सोच के साथ आगे बढ़ने और काम करने पर हमारा देश विश्वगुरु बन सकेगा।

राज्यपाल ने कहा कि भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता रहा और अन्य देश इसे लूटते रहे। उन्होंने कहा कि भारत के लिए इस विशेषण से वह संतुष्ट नहीं हैं। हमारा देश चिड़िया बनकर नहीं रहेगा, बल्कि सोने का शेर बनेगा। पूरे विश्व को लगना चाहिए कि भारत उनका गुरु है। इसके लिए हमें संकल्पित होकर कार्य करना होगा ।

■

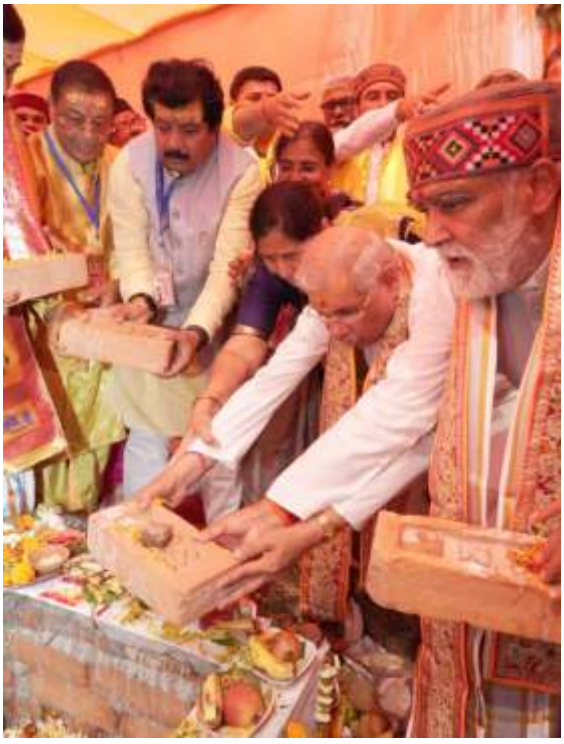

मंदारेश्वर काशी विश्वनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार का शिलान्यास करते महामहिम (10 मार्च, 2023)

महान गणितज्ञ और खगोलविद्

आर्यभट्ट

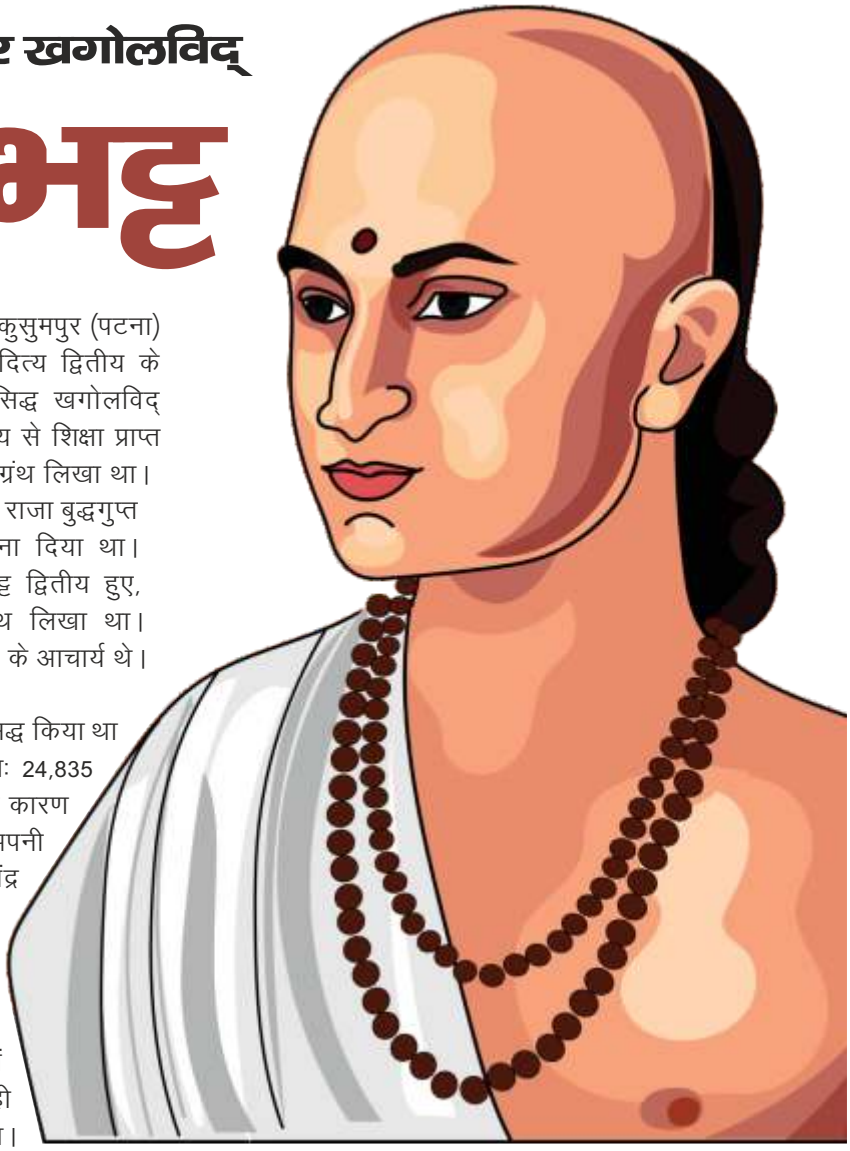

आर्यभट्ट का जन्म ईस्वी सन् 476 में कुसुमपुर (पटना) में हुआ था। वह सम्राट विक्रमादित्य द्वितीय के समकालीन थे। इनके शिष्य प्रसिद्ध खगोलविद् वराहमिहिर थे। आर्यभट्ट ने नालंदा विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त कर मात्र 23 वर्ष की आयु में 'आर्यभट्टीय' नामक ग्रंथ लिखा था। उनके इस ग्रंथ की प्रसिद्धि और स्वीकृति के चलते राजा बुद्धगुप्त ने उनको नालंदा विश्वविद्यालय का प्रमुख बना दिया था। आर्यभट्ट के बाद लगभग 875 ईस्वी में आर्यभट्ट द्वितीय हुए, जिन्होंने ज्योतिष पर 'महासिद्धांत' नामक ग्रंथ लिखा था। आर्यभट्ट द्वितीय गणित और ज्योतिष दोनों विषयों के आचार्य थे। इन्हें 'लघु आर्यभट्ट' भी कहा जाता था।

सर्वप्रथम आर्यभट्ट ने ही सैद्धांतिक रूप से यह सिद्ध किया था कि पृथ्वी गोल है और उसकी परिधि अनुमानतः 24,835 मील है तथा यह अपनी धुरी पर घूमती है, जिसके कारण रात और दिन होते हैं। इसी तरह अन्य ग्रह भी अपनी धुरी पर घूमते हैं, जिनके कारण सूर्य ग्रहण और चंद्र ग्रहण होते हैं।

आर्यभट्ट के 'बॉलिस सिद्धांत' (सूर्य–चंद्रमा ग्रहण के सिद्धांत), 'रोमक सिद्धांत' और 'सूर्य सिद्धांत' विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। आर्यभट्ट द्वारा प्रतिपादित 'वर्षमान', 'टॉलमी' की तुलना में अधिक वैज्ञानिक है। आर्यभट्ट के प्रयासों द्वारा ही खगोल विज्ञान को गणित से अलग किया जा सका।

बीजगणित में भी सबसे पुराना ग्रंथ आर्यभट्ट का है। उन्होंने दशमलव प्रणाली का विकास किया। उन्होंने सबसे पहले 'पाई' का मूल्य (मान) निश्चित किया और उन्होंने ही सबसे पहले 'साइन' (sine) के 'कोष्ठक' दिए। गणित के जटिल प्रश्नों को सरलता से हल करने के लिए उन्होंने ही समीकरणों का आविष्कार किया, जो पूरे विश्व में प्रख्यात हुआ। एक के बाद ग्यारह शून्य जैसी संख्याओं को बोलने के लिए उन्होंने नई पद्धति का आविष्कार किया।

बीजगणित में उन्होंने कई संशोधन, संवर्द्धन किए और गणित ज्योतिष का 'आर्य सिद्धांत' प्रचलित किया। आयु के आखिरी पड़ाव पर आर्यभट्ट ने 'आर्यभट्ट सिद्धांत' नामक ग्रंथ की रचना की जिसमें रेखागणित, वर्गमूल, घनमूल जैसी गणित की कई बातों के अलावा खगोलशास्त्र की गणनाएं और अंतरिक्ष से संबंधित बातों का भी समावेश है। आज भी 'हिन्दू पंचांग' तैयार करने में इस ग्रंथ की मदद ली जाती है।

भारत में खगोलशास्त्र के सूत्र हमें ऋग्वेद में देखने को मिलते हैं। वैदिककाल में भी कई खगोलशास्त्री हुए हैं जिनके ज्ञान को ही बाद के वैज्ञानिकों ने आगे बढ़ाया। आर्यभट्ट के अलावा, भास्कराचार्य (1114–1179 ई.), बौद्धयन (800 ई.पू.), ब्रह्मगुप्त (598–668 ई.) और भास्कराचार्य प्रथम (600–680 ई.) भी महान गणितज्ञ और खगोलशास्त्री थे।

आर्यभट्टीय गोलपाद–13 के सूक्त के अनुसार–

उदयो यो लंकायां सोस्तमयः सवितुरेव सिद्धपुरे।
मध्याह्नो यवकोट्यां रोमकविषयेऽर्धरात्रः स्यात।।

अर्थात जब लंका में सूर्योदय होता है, तब सिद्धपुर में सूर्यास्त हो जाता है। यवकोटि में मध्याह्न तथा रोमक प्रदेश में अर्धरात्रि होती है।

आर्यभट्ट के सिद्धांत पर 'भास्कर प्रथम' ने टीका लिखी। भास्कर के तीन अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं– 'महाभास्कर्य', 'लघुभास्कर्य' एवं 'भाष्य'। खगोल और गणितशास्त्र– इन दोनों क्षेत्रों में आर्यभट्ट के महत्वपूर्ण योगदान के स्मरणार्थ भारत के प्रथम उपग्रह का नाम 'आर्यभट्ट' रखा गया है। इसी महान मनीषी के नाम पर बिहार में 'आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय' की स्थापना की गई है। पटना से सटे दानापुर के एक हिस्से का नामकरण 'खगौल' इसी खगोलविज्ञानी के नाम पर है।

■

बेजोड़ बेलग्रामी

भोजपुर की खास मिठाई बेलग्रामी की उत्पति रसगुल्ला से हुआ है।

जिस तरह से रसगुल्ला शब्द सुनते ही आपकी जीभ से लार टपकने लगता है वैसे ही बेलग्रामी को लेकर भी जी मचलने लगता है। बेलग्रामी बिहार की विशुद्ध देसज मिठाई है। सिलाव का खाजा, शीतलपुर के रसगुल्ला और बैद्यनाथपुर के पेड़ा के स्वाद का जिस तरह से लोग कायल है, वैसे ही भोजपुर की बेलग्रामी के रस–भीनी स्वाद की भी चर्चा दूर–दूर तक होती है। मीठी आग पर दूध के छेना और चीनी की भींगी पाग से बनने वाली मिठाई बेलग्रामी की चर्चा अब भोजपुर के अलावा पूरे बिहार और अन्य प्रदेशों में भी होने लगी है।

रसगुल्ला पर बिहार, बंगाल व उड़ीसा अपना हक जमाते हुए इसका पेटेंट अपने नाम कराने का प्रयास करते हैं। रसगुल्ला को लेकर बिहार का पड़ोसी बंगाल और उड़ीसा से ठनता रहा है। बंगाल के लोगों का दावा है कि रसगुल्ला हमारा है। वहीं बिहार भी इस पर दावा करने से पीछे नहीं हटता। लेकिन, रसगुल्ला से एक और मिठाई की उत्पति हुई है जिसका संबंध भोजपुर से है। इसे हम सब बेलग्रामी के नाम से जानते हैं। बहुत कम लोग जानते हैं कि रसगुल्ला से बेलग्रामी की उत्पति कैसे हुई, इसकी कहानी काफी रोचक है। भोजपुर के एक गांव से बेलग्रामी नाम का एक आदमी कोलकाता के एक प्रसिद्ध दुकान में रसगुल्ला बनाने की कला सीखने गया। एक दिन उसने अपने उस्ताद के बताए अनुसार स्वतंत्र रूप से रसगुल्ला बनाने का प्रयास शुरू किया। लेकिन, वह रसगुल्ला नहीं बना सका। रसगुल्ला की जगह उससे अधिक कड़ा कुछ चीज बन गया। अब बेचारा अपनी गलती पर पश्चाताप करने लगा और वहां से भागने के लिए अपना झोला समेटने लगा। इसी बीच उसका उस्ताद वहां आया। पूरी बात सुनने के बाद उसने उसे कहा कि पहले मुझे अपना बिगड़ा हुआ रसगुल्ला दिखाओ। उसे देखने के बाद उसने छेना से तैयार उस अनगढ़ मिठाई को चखा। चखने के बाद उसके मुंह से निकला लाजवाब।

फिर क्या था, उसने रसगुल्ला की जगह गलती से तैयार उस बेड़ौल–अनगढ़ मिठाई को दुकान के मालिक के समक्ष प्रस्तुत कर दिया। अच्छा स्वाद होने के कारण सब लोगों ने उसकी तारीफ की। इस प्रकार रसगुल्ला निर्माण की प्रक्रिया से ही तैयार उस मिठाई का नाम बेलग्रामी हो गया। आरा शहर के पास स्थित उदवंत नगर इस मिठाई के लिए प्रसिद्ध है। भोजपुर के आरा के अलावा जगदीशपुर और पीरो में भी बेलग्रामी बनाई जाती है। पटना की भी कतिपय दुकानों में यह मिठाई मिलती है। धीरे–धीरे प्रदेश के अन्य हिस्सों में भी बेलग्रामी पहुंच गई है। दूध के छेना से बनी यह मिठाई रस से पगी होती है। थोड़े से कड़ापन के साथ स्वाद में एक अलग तरह का सोंधापन होता है, जो इसे अन्य मिठाइयों से विशिष्ट बनाता है।

■

'चैतऽ मासे राम के जनमिया हो रामा...'

■ राकेश प्रवीर

हिन्दू कैलेंडर में चैत माह को वर्ष का पहला महीना माना गया है। इस महीने का यूं तो इसलिए भी महत्व है कि शीत के प्रकोप से सकुचाई–सिकुड़ी प्रकृति नए रूप–रंग में इठलाती–बलखाती–मुस्कुराती हुई जन–जीवन में उत्साह, उल्लास और ऊर्जा का संचार करती है। ऐसे में बिहार में गाए जाने वाले गीत 'चैता' या 'चैतावर' में मानव–मन का सप्तरंग साकार हो उठता है। इस महीने में गांव से लेकर शहरों तक में चैता–गायन का आयोजन किया जाता है। बिहार और खास कर पूर्वी उत्तर प्रदेश में चैत महीने में गाए जाने वाले लोकगीत को चैता, चैती या चैतावर कहा जाता है। इन गीतों में मुख्य रूप से प्रियतमा से मिलन की चाह और विरह की पीड़ा का वर्णन होता है। आधुनिकता के चकाचौंध में गायन की यह परंपरा अब थोड़ी मंद हो गई है, मगर आज भी भोजपुर, औरंगाबाद, बक्सर, रोहतास, गया और भोजपुरी अंचलों में चैता का चौपाल सजता है और लोककंठ में यह अपनी पूरी मादकता के साथ संरक्षित भी है। चैता गीत को बिहार में कई नामों से जाना जाता है। इसे भोजपुरी में घाटो, मगही में चैतार और मैथिली में चैतावर कहा जाता है।

चैत महीने में राम का जन्मोत्सव होने के कारण राम का वर्णन भी चैता गीतों में प्रमुखता से होता है। इसीलिए तो चैता का सर्वाधिक प्रसिद्ध तान ' चैत मासे राम के जनमिया हो रामा , चैत मासे हो राम.... .के लय–ताल पर झूमने वाले लाखों–करोड़ों लोगों के मन में संचित वह भाव प्रस्फुटित होता है जो प्रभु श्रीराम के प्रति उनके अगाध आस्था, प्रेम और भक्ति को दर्शाता है। चैता के अमूमन सभी गीतों का टेक– 'हो रामा...' से शुरू होता है, जो लोकमानस में राम से गहरे सरोकार को भी स्थापित करता है।

कतिपय चैता गीतों में कृष्ण और राधा के विरह का भी जिक्र है,.... 'हो रामा,कान्हा निर्मोही सुधियो न लेवे....चइत महीनवा, पछिया चले हिलकोर, अगिया लगाए हो रामा...चइत महीनवा।' इसके अलावा चैता गीतों में शिव पार्वती के भी संवाद पिरोये गए हैं– 'शिव बाबा गइले उतरी बनिजिआ, लेइ अइले, भंगिया धतुरवा हो रामा.....' प्रचलित चैता गीतों में से एक है।

चैत ऋतु परिवर्तन का भी महीना है। कंपकपाती ठंड के बाद पतझड़ बीत चुका होता है और वृक्षों एवं लताओं में नई–नई कोपलें आ जाती हैं। फूल खिलने लगते हैं और उसके मादक गंध से चहुंओर मदहोशी–सी छा जाती है। विरह–मिलन, मान–मनुहार की अभिव्यक्ति के साथ ही सलाहना–उलाहना के स्वर भी चैता के गीतों में ध्वनित होता है। मौसम की मादकता जब लोकस्वर में आकार लेता है तो सहज ही कंठ से फूट पड़ता है– 'हे रामा चइत महीनवा बहे लागल झिरी झिरी पुरवा बयार हो रामा चइत महीनवा.....।'

लोककण्ठ से निःसरित चैता में ग्राम्यजीवन और कृषि संस्कृति का स्वर भी मुखर होता है। फागुन के रंगोत्सव के बाद खेतों में लहलहलाती फसलों के पककर तैयार होने व मंजरों से आम्रवनों के लद जाने की खुशी का यह समय किसानों के अथाह आह्लाद का अवसर होता है। 'हो रामा चइत महीनवा.... आमवा मोजराइल, खेतवा गदराइल हो रामा चइत महीनवा....' के स्वर के साथ ही किसानों का मन–मयूर भी नाच उठता है। चैता का लोकरंग लोकमन में रचा–बसा है। कई नामचीन लोक व शास्त्रीय गायक–गायिकाओं ने भी स्वर देकर न केवल इसे सजाया–संवारा है, बल्कि संजोने में भी अपनी महत्ती भूमिका का निर्वाह किया है। ■

अखबारों में राज्यपाल

बिहार के नए गवर्नर का हिंदी प्रिंट मीडिया को दिया पहला इंटरव्यू ; हाल में तमाम यूनिवर्सिटी पर उठाए कड़े कदमों पर उनसे बेबाक बातचीत...

भास्कर : जाते-जाते पूर्व राज्यपाल फागू चौहान के किए फैसलों की गहन समीक्षा को क्या समझें हम?

गवर्नर बोले-पूर्व राज्यपाल ने पूरी तरह गलत किया..मैं यह नहीं मानता, पर जहां जरूरी होगा उनके फैसलों को रिव्यू जरूर करूंगा

जरूरत हुई तो सिस्टम की पूरी सर्जरी की जाएगी - राज्यपाल

ये भी बोले

सबसे बड़ा पेन इरिया लेट सेशन

Arlekar sworn in as 41st guv

...में मिला अनुशासन, बंधन नहीं समझें मर्यादा : राज्यपाल

सोने की चिड़िया नहीं, शेर बन दहाड़ेगा भारत : राज्यपाल

Axe falls on registrar after Senate meet

GOVERNOR HAD HINTED AT SOME TOUGH MEASURES DURING THE MEET

गोवा में मंत्री और विधानसभा अध्यक्ष रह चुके हैं अरलेकर

राज्यपाल से मिले पीएम...

...जेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने ली राज्यपाल पद की शपथ

Guv to chair varsity Senate meet tomorrow

शोभायात्रा के अभिनंदन महोत्सव में शामिल हुए राज्यपाल व मुख्यमंत्री

कैंसर अस्पताल की पहल से ब्रेस्ट कैंसर ...विश्वस्तरीय कार्यशाला का सफल आयोजन

राज्यपाल व सीएम ने स्वामी सहजानंद को दी श्रद्धांजलि

भारत को विश्वगुरु बनाने के लिए स्व जागरण जरूरी

बोले राज्यपाल

प्रदेश में उच्च शिक्षा में सुधार के लिए शीघ्र कदम उठाऊंगा : राज्यपाल

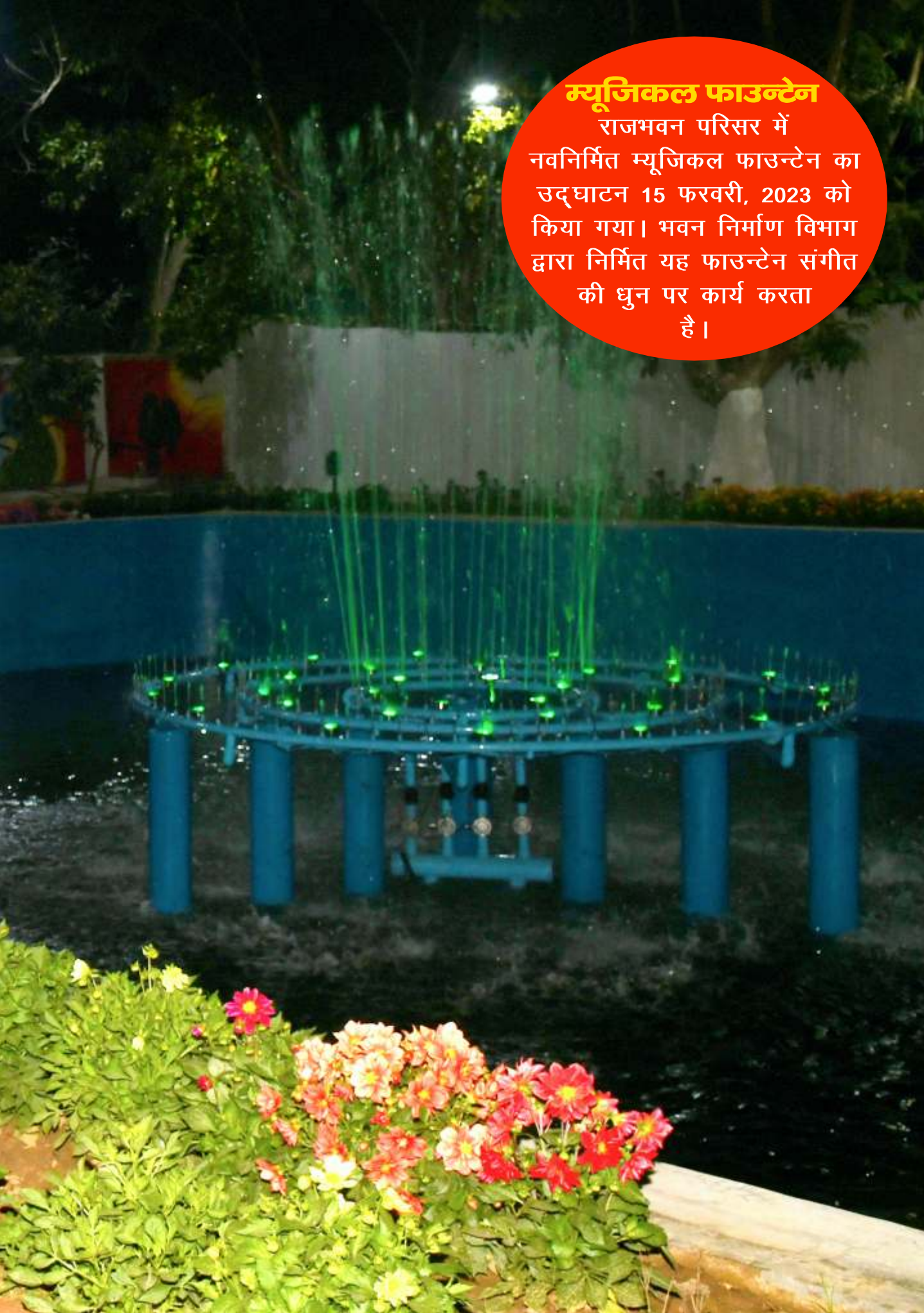

म्यूजिकल फाउन्टेन

राजभवन परिसर में नवनिर्मित म्यूजिकल फाउन्टेन का उद्घाटन 15 फरवरी, 2023 को किया गया। भवन निर्माण विभाग द्वारा निर्मित यह फाउन्टेन संगीत की धुन पर कार्य करता है।